

४

१०००. श्रीराम चरणो मुखे कवि कि जगदीश्वर.
२०००. श्रीरामायण सार.
३०००. श्रीरामायण सार.

२०००

१००० ...

१००० कन्दोय मूलमूल

१००० मन्दीरों में
१००० मन्दीरों में
१००० मन्दीरों में

१००० स्वयंसेवक
१५०० स्वयंसेवक
२५०० स्वयंसेवक
३५०० स्वयंसेवक
४५०० स्वयंसेवक
५५०० स्वयंसेवक
६५०० स्वयंसेवक
७५०० स्वयंसेवक
८५०० स्वयंसेवक
९५०० स्वयंसेवक
१०५०० स्वयंसेवक

१००० स्वयं सेवक संघ
१००० स्वयं सेवक संघ
१००० स्वयं सेवक संघ

१००० स्वयं सेवक
१००० स्वयं सेवक
१००० स्वयं सेवक

[illegible]

१.००० दान की...

१००० प्रभुदेवी २०
१००० प्रभुदेवी २०
१००० प्रभुदेवी २०

१००० प्रथम भाग
१००० द्वितीय भाग
१००० तृतीय भाग

.....

.....

... ..

[illegible]

7000

1999

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

10

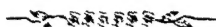
श्री रत्नप्रभाकर गानपुष्पमाला छुप्प नं. ४८.

श्री रत्नप्रभाकरी सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकनाप्रबंध.

भाग १३ वा.



थोकडा नम्बर १.



बहुश्रुती कृत १४ राज.

जहापर पाचात्मकाय हे उन्हीकां लोक कहा जाते हे
उह लोक अमन्याते कोहनकोट योजनेके विस्तारवाला हे
उन्हाका परिमाणके लये रत्नना द्यो गट हे उह राज भा
अमन्य कोहे नकोट के लये रत्नना द्यो गट हे उह राज भा
राज परिमाण लोक के लये रत्नना द्यो गट हे उह राज भा
अमन्य कोहे नकोट के लये रत्नना द्यो गट हे उह राज भा
राज परिमाण लोक के लये रत्नना द्यो गट हे उह राज भा

नम	जाटी	पहली.	घनराज.	परतर.	मुचि.	खण्ड.
गन्धप्रभा	१	राज	१	राज	१६	राज
गान्धप्रभा	१	॥	६१	२५	१००	१००
गान्धप्रभा	१	॥	२६	६४	२५६	१०२४
गान्धप्रभा	१	॥	२५	१००	४००	१६००
गान्धप्रभा	१	॥	३६	१४४	५७६	२३०४
गान्धप्रभा	१	॥	४२१	२६६	६७६	२७०४
गान्धप्रभा	१	॥	४६	१६६	७८४	३१३६

यथाज्ञानं मय घनराज १७५ परतरराज ७०२ खचिराज २८०८ खण्डराज १७०३० होते हैं

मार्थमन्त्रांगे १। राजउर्ध्वे जांचे तव पेहला दुसरा देवलोक आता है जिसमे आ दो राजउर्ध्व जांचे तव एक राजविस्तार है वहाँसे आदो राजउर्ध्व जांचे तव १॥ राजविस्तार है वहाँसे पांच राज जांचे तव २ राजविस्तार वहाँसे पांच राज जांचे तव २॥ राजविस्तार है वहाँ पर मध्यमे इशान देवलोक है।

मार्थम इशान देवलोकमे उर्ध्व एक राज जाते हैं वहाँपर तीजा चौथा देवलोक जाते हैं जिसमे पांच राज जांचे तव ३ राजविस्तार वहाँसे पांच राज जांचे तव ३॥

वस्तुनिर्देशमें नय कि अपेक्षा अवश्य होती है, वह नय मुख्य दो प्रकारकी है. (१) निधननय, (२) व्यवहारनय. जिसमें निधननयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रमा नरकके अवकाश अन्तराके असंख्यातमे मागमें है. वास्ते अधोलोक संभूमितलासे साधिक सात राज है, और उर्ध्वलोक कुच्छ न्यून सात राज है तथा तीरच्छालोक जाडा १८०० योजनका है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज अधोलोक और सात राज उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके सेमल माना जाता है, वह व्यवहारनयकी अपेक्षासे ही यहापर बतलाये जावेगा.

प्रथम चार प्रकारके राज होते है उन्हीकों ठीक (२) ममकना.

(१) घनराज—एक राज लंबा, एक राज चौडा, एक गज जाड हो

(२) परतराज—एक घनराजका चार परतराज होता है

(३) मुनिराज—एक परतराजका चार मुनिराज होता है.

(४) गण्डगराज—एक मुनिराजका चार गण्डगराज होता है

अधोलोक मान गहरा जाइयगामें है यह १ ॥

लोकमे मान नरक २. १४ प्रत्येक नरक एकेकर तक
विशेष प्रदेम दलों

वहाँ च्यार राजपिस्तार हैं वहाँ पर सनत्कुमार महेन्द्र देवलोक
आता है.

सनत्कुमार महेन्द्र देवलोकसे पुण ०॥॥ राज उर्ध्व जाये तब
पाँचवा ब्रह्मदेवलोक आता है वह पाँच राजके विस्तारवाला है।

पाँचवा देवलोकमे पाय ०। राज उर्ध्व जाये तब छठा
स्तवक देवलोक आता है वह भी पाँच राजके विस्तारवाला है।

छठा देवलोकमे पाय ०। राज उर्ध्व जाये तब मातवा
महाशुक्र देवलोक आता है वह च्यार राजके विस्तारवाला है
वहाँमे पाँच राज उर्ध्व जाये तब आठवा महम देवलोक च्यार
राजके विस्तारवाला आता है।

आठवा देवलोकमे आता ०॥ राज उर्ध्व जाये तब
नवमा दशवा देवलोक आता है वह भी पाँच राजके विस्तारवाला
है वहाँमे आता ० राज उर्ध्व जाये तब दसवा देवलोक आता
है वहाँमे आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

दसवा देवलोक आता है ० च्यार राज उर्ध्व जाये तब

उर्ध्वलोकके सर्व धनराज ६३॥ परतर २५४ धनि
१०१६ गण्डराज ४०६४ तीरस्थो लोक एक राजविस्तार-
माला है जिसमें अगल्यातडीप समुद्र है परन्तु १८०० ओन्नतका
वाइपणामे होनामे किमी राजकी मंज्या नहीं है.

मम्पुरगा लोकके धनराजादि संख्या.

(१) धनराज	२३६	(३) धनिराज	३८२४
(२) धनराज	६४६	(४) गण्डराज	१४२६६

मेवं भवे मेवं भवे तमेव मयम् ।

इति

शोकटा नम्यः ७

दत्तमय मय्यः ४४

नम्यः क. ११ ५४

११

११

११

११

११

११

- (७) पात्थडेद्वार (८) अन्तराद्वार (९) पात्थडेअन्तरो
 (१०) घणोदधि० (११) घणवायु० (१२) वृणवायु०
 (१३) आकाशद्वार (१४) नरकअन्तरो० (१५) नरकावासा
 (१६) अलोकान्तरो० (१७) घलीयाद्वार (१८) क्षेत्रवेदना०
 (१९) देववेदना० (२०) वैक्रयद्वार (२१) अल्पवदूतद्वार

(१) नामद्वार—गमा वनशा शीला अजना रीठा मघा माघवती.

(२) गोत्रद्वार—रत्नप्रभा शार्कर० बालुकाप्रभा पंक-
 प्रभा धूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रभा ।

(३) जाडपणो—प्रत्येक नरक एकेक राजाकी जाडी है।

(४) पादलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली है, दूसरी ८॥ गज, तीसरी चार गज, चौथी पांच गज, पांचवी छे गज, छठी भाडाछे गज, सातवी नरक सात राज बे विभागमें है परन्तु नार्गिकके नैगिया एक गजके विभागमें है अन्दीको प्रमनाली कहा जाता है ।

५ पृथ्वीपण्डद्वार—प्रत्येक नरकके अमन्यात अमन्यात जोजनकी है परन्तु पृथ्वीपण्ड पहेली नरकका १८०००० दूसरीका १६०००० तीसरीका १०८०० चौथीका १२०००० पांचवीका ११८०० छठीका १०६० सातवीका १०८००० भोजनका है.

(६) पात्यडेपात्यडे अन्तरद्वार-देहली नरकके पात्यडे पात्यडे ११५२३३ दुसरा ६७०० तीनरी १२७५० चोथी १६१६६३ पांचनी २५२५० छठी ५२५०० सातनी नरकके पात्यडा एक ही है.

(१०) घरोदद्विद्वार प्रत्यक नरकपण्डके निचे २०००० जो० कि घरोदद्वि पकाबन्धा हुआ पायी है.

(११) घरवायु-प्रत्यक नरकके घरोदद्विके निचे अत-ख्यात २ जोवनके घनवायु है पकाबन्धा हुआ वायु है.

(१२) वरवायु-प्रत्यक नरकके घरवायुके निचे अत-ख्यात २ जोवनके वरवायु पावला वायु है.

(१३) आकाश-प्रत्यक नरकके वरवायुके निचे अत-ख्यात २ जो० का आकाश है अर्थात् आकाशके आधार वरवायु है वरवायुके आधार घनवायु है घनवायुके आधार घनोदद्वि है घनोदद्विके आधारमे पृथ्वीपण्ड है.

(१४) नरक नरकके अन्तरा-एकेक नरकके विचमे अनंग्यात अनंग्यात जोज्जका अन्तर है.

(१५) नरकावामाद्वार-नरकावामा दो प्रकारके है
१ अनंग्यात जोवनके बिलगवान जिम्मे अनंग्यात नेरीया है
२ अनंग्यात जो जिम्मे अनंग्यात नेखेया है नवे नरकावा
मोक पाच विभाग कर दीया जय जिम्मे स्थार विभाग ने

असंख्याता जोजनका है और एक विभाग संख्याते जोजन-
वाले है नरकावास पहली नरकमें ३० लख, दूसरीमें २५ लख
तीसरीमें १५ लख, चौथीमें १० लख, पांचवीमें ३ लख,
छठीमें पांचकम लख, सातवी नरकमें ५ महानरकावास है
संख्याता जोजनका नरकावासाका परिमाण जैसे कोई शीघ्र-
गतिका देवता तीन चीमटी बजावे इतनामें जम्बुद्वीपके २१
प्रदिवशा दे आवे इसी शीघ्रगतिसे चाले वह देवता जघन्य
१-२-३ दिन उत्क० ६ मास तक चले तो कितनेक संख्यात
जोजनके नरकावासोंका अन्त आवे और कितनेकके अन्तभी
नहीं आवे.

(१६) अलोक अन्तरा० (१७) पत्नीयाद्वार-अलोक
और नारकीके अन्तर है जिसमें तीन तीन प्रकारका गोल
पुटी माफ़ीक पत्नीया है वह यंत्रसे देखो.

नरक	रत्न०	शा०	पा०	पं०	धूम०	तम०	तम०
अलोकअन्तरा	१२जो.	१२३	१२३	१४	१४३	१४३	१४
पत्नीयामंख्या	३	३	३	३	३	३	३
पत्नीयादि	६	६३	६३	७	७३	७३	७
पत्नीयापु	४॥	४॥॥	४	४॥	४॥	४॥॥	४
पत्नीयापु	१॥	१०॥३	१॥३	१॥॥	१॥॥३	१॥॥३	१॥

शोभनीक है इत्यादि ओर भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तर्फ है इसी भाषीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलंकार सभा (४) व्यवाय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा—देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष किया जाता है.

(३) अलंकार सभा—देवतोंके श्रृंगार करते योग वस्त्र-भूषण रहते हैं.

(४) व्यवाय सभा—देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहते हैं.

(५) सौधर्मी सभा—जहां जिनमन्दिर चैन्यम्यंभ शस्त्रकोष आदि हैं ओर सुधर्म सभामें देवतोंके इन्माफ किया जाता है इत्यादि.

५. भुवनसंग्रहद्वार-भुवनपतियोंके भुवन ७७२००००० है। अर्थात् ७७२०००० भुवन दक्षिणदिशामें हैं ३६६०००० उत्तरकी तर्फ हैं. देखो चित्रमे—

१. भुवनपति.

दक्षिणदिशा.

उत्तरदिशा.

कुलसुवन.

यमरा.

३४

लघु

३०

लघु

६४ लघु

नागा.

४४

"

४०

"

"

ममरा.

३८

"

३४

"

"

लज्ज.

४०

"

३६

"

"

पाव.

४०

"

३६

"

"

लज्ज.

४०

"

३६

"

"

लज्ज.

४०

"

३६

"

"

लज्ज.

४०

"

३६

"

"

पाव.

४०

"

४४

"

"

मनन.

४०

"

३६

"

"

२५

(६.) वर्ग, (७) वस्त्र, (८) चन्द, (९) इन्द्र.

१. अ०	रत्न द्वार	वस्त्र द्वार	चन्द द्वार	दशमोन्द्र	उत्तरोन्द्र
२. अ०	रत्ना	रत्ना	वृद्धमणि	चर्मोन्द्र	चर्मोन्द्र
३. अ०	भक्त्या	निन्ता	नारायण	भक्त्योन्द्र	भक्त्योन्द्र
४. अ०	मन्त्र	धोला	गुरु	वेणुदेव	वेणुदेवी
५. अ०	रत्ना	निन्ता	पञ्च	हरिकण	हरिकण
६. अ०	रत्ना	निन्ता	कल्या	अपिर्गिह	अपि-मानव
७. अ०	रत्ना	निन्ता	मिह	पूर्ण	विद्योष्ट
८. अ०	पट्ट	निन्ता	यश्च	जलकल	जलमय
९. अ०	गुण	सुपेता	गज	अमृतमणि	अमृतचक्रान
१०. अ०	व्याप	पानि वर्ग	मगर	वेणु	वर्गजन
११. अ०	गुण	मुपेता	चर्ममान	पान	सहायोग

(१७) परिचारण—भुवनपति देवोंके परिचारणा (मंथुन) पाँच प्रकारकी है यथा मनपरिचारणा रूप० शब्द. स्पर्श० कायपरिचारण—मनुष्यकी भाफीक देवांगनाके साथ भोगविलास करे इति. देखो परिचारणापद.

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भुवनपति देव-देवीमें सम्पुरण जम्बुद्वीप भरदे समंख्यातेकी शक्ति है एवं ममानिक लोकपाल तावतीमका और देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति मंख्यातेदिपकी है एवं बलेन्द्र परन्तु एक जम्बु-द्विप साधिक मममना शेष १८ इन्द्र एक जम्बुद्विप भरे और सबके मंख्यातेदिपकी शक्ति है देवतोंके वैक्रयका काल ३० १५ दिनका है.

(१९) अयधिद्वार—अमुरकुमारके देवता अयधिघ्नानमें ३० २५ जोवन ८० उर्ध्व माधर्म देवलोक अयो० तीमरी नरक तीर्थ० अमंख्याते द्वीप समुद्र शेष ६ देव ३० उर्ध्व जोनीर्षीयोंके उपरका तना अयो० पेदना नरक तीर्थ० मंख्यातेदिप समुद्र देखे.

(२०) मिद्वार—भुवनपतियोंमें निकल मनुष्य हो के एक ममयमें १० जीवमांघ जावे देवीमें निकलके एक ममय ५ जीव मोघ जावे

(२१) उत्पन्न—सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व भुवनपति देवों देवी पणों पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवे अर्थात् देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते हानो-घमकर आत्माको अमर बनानी चाहिये इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.



धोकडा नं. ४



बहुत सूत्रसे संग्रह.



(अन्तर देवोके द्वार २१)

(१) नामद्वार	(८) चन्द्रद्वार	(१५) वैक्रयद्वार
२) वामाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
३) नगरद्वार	(१०) मामानीक देव	(१७) परिचारणा
४) राजधानी	(११) आत्मरक्षक	(१८) मुखद्वार
५) मभाद्वार	(१२) परिषदाद्वार	(१९) मित्रद्वार

- (६) वर्णद्वार (१३) देवीद्वार (२०) भवद्वार
(७) वसुद्वार (१४) अनिकाद्वार (२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरष, मोहग, गभर्व, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, भुइवाइ, कंडे, महाकंडे, कोहंड, पयंगदेवा, इति.

(२) वासाद्वार—व्यंतर देव काहापर रहेते हैं ? यह स्तनप्रभा नरक जो १८०००० जोजनकी जाडपणावाली है जिस्मे एकहजार उपर ओर एकहजार निचे छोडनेमे मध्यमे १७८००० जोजन रहेती है इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पण्ड था उन्हीको एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छेड देनामे मध्य ८०० जोजनका पण्ड है इन्हीके अन्दर बांगमित्र आठ जनाका देवता निवाम करते हैं यथा पिशाच यावन गंधर्व और जो उपर १०० जोजनका पण्ड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८० जोजनका पण्ड है जिम्मे आठ जनाका व्यतर देव निवाम करते हैं

३ नगद्वार—दसगद्वारमे बनाये हुये म्थानमे नीगन्ध्र जोकम बांगमित्र और व्यतर देवतोंके अमग्याने नगर है बड़

नगर असंख्याते और संख्याते जोजनके विस्तारवाले है सर्व रत्नमय है परिमाण भुवनपतियों माफीक.

(४) राजधानीद्वार—बांखमित्र और व्यंतर देवोंकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें है जैसे भुवनपतियोंके राजधानीका वर्णन किया गया था उसी माफीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.

(५) नभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांचपाच सभा है यथा (१) उत्पातसभा (२) अभिशेषसभा (३) अलंकारसभा (४) व्यवसनभा (५) सौधमेसभा विस्तारभुवनपतिमे देखो.

६ वरुणद्वार देवनोंका गरीरका वर्ण—'यद्यपि पिशाच मांसमांस भक्षण करनेवाला वर्ण ग्रहण है किन्तु देवोंको नल्लो रत्न रत्नमय और 'वपुष्पक' वर्ण धवलो भूतदेवोंको वर्ण काला है' माफीक विस्तारदेवोंके समस्त

अध्याय १ पञ्चम अध्याय भूतदेव निलंबक १८
'वपुष्पक' वर्ण देवोंके मांसमांस भक्षण करनेवाला

(१०) सामान्यिक द्वार-मर्ष इन्द्रोके चार चार हजार
च सामान्यिक है.

(११) सामान्यिक-मर्ष इन्द्रोके. गोले गोले हजार दैव
सामान्यिक है.

(१२) सत्पदा द्वार-कार्य ध्वनसगिपोंके मापिक.

सत्पदा.	दैव सत्पदा.	दैवी सत्०
अभितर	८०००	१००
स्थिति	०॥ सन्धो०	०॥ माधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ प० न्यून	०॥ प०
बाध	१२०००	१००
स्थिति	०॥ माधिक	०॥ न्यून

३ देवी-प्रत्येक इन्द्रोके चार चार देवी है एकैक
हजार हजार देवीक परमार है एकैक देवी हजार हजार
हजार चार चार शक्ति है

४ सामान्यिक द्वार-मर्ष इन्द्रोके चार चार सामान्यिक
हजार हजार सामान्यिक है एकैक देवी हजार हजार
हजार चार चार शक्ति है

जम्बुद्विप स्थित देव देवी का रूप वैकुण्ठ बना शक्तों के संगम्यते की शक्ति है.

(१६) अग्निधारा—वाणमित्र देव अग्निधारा में उ० २५ जोवन उ० उ० उ० जोनीलीपोंके उपरका गना अ० ० पैदमी नरक तीर्थ० संगम्यते द्विप समुद्र.

(१७) परिचारणाधार--मरी देवोंके पांच प्रकाशके परिचारणा है यथा मन, रूप, शब्द, स्पर्श, और कायपरिचारणा अर्थात् मनुष्यकी मात्मीक भोगविनाश करते है.

(१८) मुराधार—यहां मनुष्यलोकमें कोई मनुष्य पुनरु अवस्थामें मनमोहन पुनरु सुन्दर जोवन रूप लालचयानमें सादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था वहमें मनोइच्छित द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक जोवन अवस्थामें अरादित सुख भोगमें उन्होसे स्थित देवोंका मुरा अन्नन्तगुण है

(१९) सिद्धधार वाणामित्र (निकलक मनुष्यभवकर एक समयमें १० और १० गम निकलक) तीर्थों के समय भास जात है

(२०) भवधार—वाणामित्र १० भव भवामें भव कर तो १ २-३ उ० के उ० नन्त नन्त कर शक्त है

(२१) उ० अ० १० यही वाण पुनरु जोवन मन्व वाणामित्र देवतो पण १० करार नदी कि० १० अन्नन्त अन्नन्तवार उत्पन्न

कह गये ज़ोलीपी शिवा है इन्हीका परिवार विगार मन्दार
ज़ोलीपीयों माफीक गमकना.

मदारदीपक मन्दार जो ज़ोलीपी है यह पर-भन
कर्मराज है और ममण कर्मराज ही कुशी मानते है उन्ही
विस्तारके लिये ज़ोलीपी नकका थोकडा मन्दारप्रभाती और
प्रभातीमें निर्योग वस्तु सामान्यतामें यहीपर ३१ डारमें ज़ोली
पीपीका थोकडा निर्या जाता है कि माधारण मनुष्यनि इन्ही
जाय इडा मक.

(१) नाथडा	(२) मतिडा	(३) देवीडा
(४) वायडा	(१३) नाथमंडा	(१३) मतिडा
(५) मंडा	(१४) मंडा	(१४) मतिडा
(६) मंडा	(१५) मंडा	(१५) मतिडा
(७) मंडा	(१६) मंडा	(१६) मतिडा
(८) मंडा	(१७) मंडा	(१७) मतिडा
(९) मंडा	(१८) मंडा	(१८) मतिडा
(१०) मंडा	(१९) मंडा	(१९) मतिडा
(११) मंडा	(२०) मंडा	(२०) मतिडा
(१२) मंडा	(२१) मंडा	(२१) मतिडा
(१३) मंडा	(२२) मंडा	(२२) मतिडा
(१४) मंडा	(२३) मंडा	(२३) मतिडा
(१५) मंडा	(२४) मंडा	(२४) मतिडा
(१६) मंडा	(२५) मंडा	(२५) मतिडा
(१७) मंडा	(२६) मंडा	(२६) मतिडा
(१८) मंडा	(२७) मंडा	(२७) मतिडा
(१९) मंडा	(२८) मंडा	(२८) मतिडा
(२०) मंडा	(२९) मंडा	(२९) मतिडा
(२१) मंडा	(३०) मंडा	(३०) मतिडा

(२) वासाद्वार-जोतीपी देवों का तीरच्छालोकमें असंख्याता वैमान है वह वैमान संभूमिसे ७६० जोजन उर्ध्व जावे तब तारोंका वैमान आवे उन्ही तारोंके वैमानसे १० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आवे अर्थात् संभूमिसे ८०० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आता है. संभूमिसे ८८० जोजन उर्ध्व जावे अर्थात् सूर्य वैमानसे ८० जोजन उर्ध्व जावे तब चन्द्र वैमान आवे चन्द्रवैमानसे ४ जोजन और संभूमिसे ८८४ जोजन उर्ध्व जावे तब नक्षत्रोंका वैमान आवे वहासे ४ जो० और संभूमिसे ८८८ जो० उर्ध्व जावे तब बुध नामा ग्रहका वैमान आवे वहासे ३ जो० संभूमिसे ८९१ जो शुक्र ग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और संभूमिसे ८९० जो० बृहस्पतिग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जो० और संभूमिसे ८९७ मंगलग्रहका वैमान आवे वहासे ३ जोजन और संभूमिसे ९०० जोजन उर्ध्व जावे तब शनिग्रहका वैमान आवे अर्थात् ९०० जोजनसे ९०० जोजन उर्ध्व जावे १ जोजनक मध्यम और १० नक्षत्र जोज तब १००००० नक्षत्रोंका वैमान है.

आकाश का सब चन्द्र नक्षत्र वरुण शुक्र बृहस्पति शनि
संभूमिसे ९०० ९०० ९०० ९०० ९०० ९०० ९०० ९०० ९०० ९००

इसमें सूर्यके वैमान १० जोजनसे सब ९०००००

(३) राजधानी—जोनीपी देवों कि राजधानीयों की स्थलों में अमंगल्यानी है जेमे इस जम्बुद्विपके जोनीपी देव हैं उन्होंने कि राजधानी अमंगल्यान द्विपममुद्रा जनेपर दुमगा जम्बु द्विप आना है उन्ही के अन्दर २५ हजार जोजनके विस्तार वाली है बड़ीही मनोद्वार मर्बे गन्नमय है विस्तारभुवनविषयों माफिक है और जोनीपी देवोंके द्विप भी अमंगल्याने है पद्म बड़ द्विप मर्बे द्विपममुद्राके जोनीपीयोंका द्विपममुद्रा में है जे जम्बुद्विपके जोनीपीयोंके द्विपालयण ममुद्रा में है और सात ममुद्राके जोनीपीयोंका द्विप भी लवणममुद्रा में है तथा पात विष्णुद्विपके जोनीपीयोंका द्विप कानोददि ममुद्रा में है म माफिक मर्बे स्थानपर समजना.

(४) ममादा श्रेणीविशेषका इन्द्रोके पांच पं
ममादा है । इन्द्रायममा २ अमिगेंयममा (३) अनंत
ममा १ ममा १ ममा १ ममा १ ममा १ ममा १ ममा १
५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

हैं सूर्यके मुकुटपर सूर्यमांडलका चन्ह हैं एवं नक्षत्र ग्रह तार
उन्हीं चन्हद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(८) वैमानका पहलपणा (९) वैमानका जाडपणा —

एक जोजनका ६१ भाग किजे उन्हींमें ५६ भाग चन्द्रका वैमान
पहला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका
पहला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहला
एक गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहला
आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका
पहला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीषीयोंके वैमान आका-

शके आधारमें रहते हैं अर्थात् वैमानके पौद्रलोके अगुरुलघु
ग्राह्य हैं वर आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। तद्यपि देव

चरने मालकका बहुत नके लिए उन्हीं वैमानोंको हमेशोंके लिये

काम के लिये इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें इन्हें

४००० देव उठाते हैं ताराके वैमानकों २००० देव उठाते हैं
पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समझना.

(११) मांडलाद्वार-जोतीषीदेव दक्षिणायनसे उत्तरायन
गमनागमन करते हैं उसे मांडला कहते हैं अर्थात् चलनेकी
सड़कको मांडला कहते हैं वह मांडलोंके क्षेत्र ५१० जोजन है
जिस्में ३३० जोजन लवण समुद्रमें और १८० जोजन जंबु-
द्वीपमें है कुल ५१० जोजन क्षेत्रमें जोतीषी देवोंका मांडला है
चन्द्रका १५ मांडला है जिस्में १० मांडला लवणसमुद्रमें और
५ मांडला जंबुद्वीपमें है एवं सूर्यके १८४ मांडला है जिस्में ११४
लवणसमुद्रमें और ६५ मांडला जंबुद्वीपमें है ग्रहका ८ मांडल
है जिस्में ६ मांडला लवणसमुद्रमें २ जंबुद्वीपमें है जो जोती-
षीयोंका जंबुद्वीपमें मांडला है वह निषेड और निलवेत पर्वतों
उपर है । चन्द्रमांडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर ११ ।
और सूर्य मांडल मांडल अन्तर दो जोजनका है इति.

१२. गतिद्वार-सूर्य के गतिकान अर्थात् आमासि शु-
क्लमास गति एक महानम १२०० इतनी क्षेत्र चाले तब
मकर गतिकान अर्थात् पाप युक्त गतिकान एक महानम ५३००
तब क्षेत्र चाले चले चन्द्रमा के गतिकान एक महानम
१०००० मकर गतिकान १००० १०००

१३. नापद्वार-एक गतिकानम नापद्वार २५१०६ । १४

उगतं सूर्यं ४७२६३११ जोजन दुरासे द्रष्टिगोचर होता है मङ्ग
शंक्रात तापक्षेत्र ६३६६३११ । उगतो सूर्य ३१८३१२६१
द्रष्टिगोचर होते हैं इति.

(१४) अन्तराद्धार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है
व्याधात-किसी पदार्थके विचमें ओट आवे निर्व्याधात किसी
प्रकारकी बाध न होय जिस्मे व्याधातापेक्षा जघन्य २६६
जोजनका अन्तरा है क्योंकि निपेड निलयन्तर्पर्यंतके उपर
चंद्रशिखरपर २१० जोजनका है उन्हीमें चार्तर्फ आठ आठ
जोजन जोतीर्षदेय दुरा चाल चलते हैं वास्ते २६६ जो०
उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरुपर्यंत है
उन्हीसे चार्तर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीर्षी चाल चलते हैं
१२२४२ जो० अन्तर है, अलोक ओर जोतीर्षदेयोंके अन्तर
११११ जो० मंडलापेक्षा अन्तरा मेरुपर्यंतमे ४४८८० जो०
अन्दरका मंडलका अन्तर है, ४४३३० जो० बाह्यका मंडलके
अन्तर है चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३४ । - अन्तर है सूर्य
सूर्यके मंडलके दो जोजनका अन्तर है निर्व्याधातापेक्षा जघन्य
अन्तरा अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति

मन्वादाय जम्वाडपम दो चन्द्र दो सूर्य
मन्वाडपम चन्द्र चन्द्र सूर्य चन्द्राकमन्वाडपम
चन्द्र • सूर्य, कालादाय मन्वाडपम दो चन्द्र दो सूर्य पृथ्वी

द्विदिपमें ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, एवं मनुष्यक्षेत्रमें १३२ चन्द्र १३२ सूर्य । आगे चन्द्र सूर्यकि संख्या भस्माय-त्रिस द्विप या समुद्रका प्रश्न करे उन्हीके पीछेका द्विपमें जितना चन्द्र हो उन्हीको तीनगुणा कर शेष पिच्छलेको समल करदेना, जैसे षातकीखण्डद्विपमें १२ चन्द्र हैं उन्हीको तीनगुणा करनासे ३६ और पिच्छले जंबुद्विपका २ लवणसमुद्रका ४ एवं ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोदद्विसमुद्रमें हवे ४२ को तीन गुणकर १२६ पिच्छला २-४-१२ एवं १८ मीलानेसे १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हवा जिसमें आदा मनुष्य-लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इसी माफीक सर्व ध्यानपर भावना रखने इति.

(१६) परिग्रहद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६८ ७१ कंटाकोट नागोंका परिवार है शंका-नारोंकी मण्डपाका संवमान करनेमें हम लक्ष जोजनका संवमे इतना नाग ममायेम हा नहीं शंका है ? इसके लिये पूर्वानायोंने कंटाकोटका एक मन्त्रायमें मानी मानम होने है या किसी आचार्यन नागका रमनको उन्मेंदागुजमें भी माना है तब कहनागम्भ । इसी माफीक सर्व चन्द्र सर्व सूर्यकि मि समकना । नक्षत्रग्रहद्वारा नाम ३६जोनीया चक्रमे दम्बों

१७ इन्द्रद्वार असम्ख्याता चन्द्र सूर्य है यह सर्व इन्द्र है यान्तु संय कि अथवा एक चन्द्र इन्द्र दुसरा सूर्य इन्द्र है.

अदि सूर्यकी, उन्होमे महाअदि चन्द्रकी अर्थात् सर्वसे गल
अदि तारोंकी और सर्वसे महाअदि चन्द्र देवों की है।

(२५) वैक्रय-जोतीषी देव वैक्रयसे जोतीषी देवी देवा
बनाके सम्पूर्ण जम्बूद्विप भर दे और मंग्याता जम्बूद्विप भा
देने कि जा हे एवं चन्द्र सूर्य मामार्नाक और देवी भी
ममकना।

(२६) अवधिद्वार-जोतीषी देव अवधिज्ञानमे ज० मे
म्याने द्विप समुद्र देमे उ० भी मंग्याने द्विप समुद्र देमे उ०
अपने अपने ध्वजा। अथो वेदनी नाक देमे मारुच्छा मंग्याने
द्विपसमुद्र देमे।

२७) पश्चिमाम्ना-जोतीषी देवोंके पश्चिमाम्ना जीव
प्रकाशकी है यनकी मंग्याता कृपाक. मंग्याकी कायाकी अर्थात्
मंग्याकी मंग्याता है मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता मंग्याता

७	२४०० ,,	२०० ,,	४० ,,
८	२४०० ,,	२०० ,,	६०००
९	२३०० ,,	६०० ,,	{ ४००
१०	२३०० ,,	६०० ,,	
११	२३०० ,,	६०० ,,	
१२	२३०० ,,	६०० ,,	{
६ ग्री०	२२०० ,,	१००० ,,	
५ अणु	२१०० ,,	११०० ,,	३

सुमाख्यस, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामाविमान मणोगम
प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चन्ह, (१३) सामानीक, (१४) लोकपाल,

(१५) ताव० (१६) आत्मरक्षकद्वार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शमिन्द्र	मृग	८४०००	४	३३	३३६००
इरानेन्द्र	महेष	८००००	४	३३	३२०००
संनन्द०	सुवर	७२०००	४	३३	२८८००
मरेन्द्र	निह	७००००	४	३३	२८०००
मदिन्द्र	दवरा	६००००	४	३३	२४०००
संतकेन्द्र	टेटका	५००००	४	३३	२००००
महाशुभेन्द्र	सुख	४००००	४	३३	१६०००
महामेन्द्र	रम्भा	३००००	४	३३	१२०००
पराशर	मय	२००००	४	३३	८००००
अनन्त	सुख	१००००	४	३३	४००००

(२) इषाम्णे	"	"	"
(३) इशमे	"	"	"
(७) तपमे	"	"	"
(८) आटशा अर्गम्यातगुला			
(६) मालता	"	"	"
(१०) श्रुते	"	"	"
(११) गान्धारे	"	"	"
(१२) शोभे	"	"	"
(१३) शीत	"	"	"

१४ ६४

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २००

२०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३००

३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४००

थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञासी.

(खण्डा जोयण)

गाथा—खंडा जोयण वासा,
पञ्चय कूडा तिर्य सेढीओ ।
विजय दहे सलिलेंओ,
पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लक्ष जोजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपकों १०
द्वारमे बतलाये जावेगे.

(१) खंडा—जम्बुद्विपका भरतक्षेत्र परिमाण कितने
खंड होतें हैं

(२) जोयण—जम्बुद्विपका जोजन परिमाण कितना
खंड होता है.

(३) वामा—जम्बुद्विपमें मनुष्य रहनेका कितना
वामा है.

- (४) पव्यय-जम्बुद्विपमें सास्यता पर्वत कितने है.
- (५) कूडा-जम्बुद्विपमें पर्वतों उपर कूट है का कितने है.
- (६) तित्थ-जम्बुद्विपमें माघद्धादि तीर्थ कितने है.
- (७) सेढी-जम्बुद्विपमें विद्याधरोंकि श्रेणि कड़ी का कितनी है.
- (८) विजय-महाविदेहक्षेत्रमें मनुष्य रहनेकि तिक्र कितनी है.
- (९) दह-जम्बुद्विपमें पद्मादि द्रह कितने है.
- (१०) मलिला-जम्बुद्विपमें गंगादि नदीयों कितनी।
उपर बतलाये हवे १० डारकों शाश्वतार विम्भारपूर्व
विराज्य करने है.
- (१) मंदा-तीरान्ध्रान्तोरुमें जम्बुद्विप असंख्याने।
पान्नु यदांता जो कम नियाम का रहे है इमी जम्बुद्विप
व्याख्या करते

जम्बुद्विप राज्य वर्ति चक्र-नेत्रका पुरा कमनकि
कमका अंग पुरा च-इह काका है ११ पुरे पञ्चम एक लव
इ-इन्द्रका १२ का १३ (मी) काका इ-इन्द्रका की एक लव
इ-इन्द्रका लव १ ११ १२ १३ कावन नीनगाउ १२८ मनुष्य

सुन्दर रूप तथा मौक्तकल की मालाओं से सुशोभित है मध्य-भागमें पञ्चवर वेदिका आजानेसे दो विभाग हो गये हैं (१) अन्दर का विभाग (२) बाह्य का विभाग जो अन्दर का विभाग है उन्हीं के अन्दर अनेक जातिके वृक्ष आजानेमें अन्दरका वनखंड कहा जाते हैं उन्हीं के अन्दर पांच वर्ण के वृक्ष रत्नमय हैं पूर्वादि दिशोंका मन्द वायु चलनेमें छे गग ३६ रागणी मन और श्रवणोंको आनन्दकारी ध्वनी निकलती है उन्हीं वनखंड में और भी छोटी छोटी बाघी और पर्वत आगम हैं वह अनेक आसन पड़े हैं वहाँ व्यंतर देव और देवीयों आते हैं पूर्वकृत पुण्यकों सुखपूर्वक भोगवते हैं इगी माफीक बाह्यका वन भी रामभक्ता परन्तु वहा वृक्ष नहीं है ।

मरु पर्वत के चारों दिशा पैनालीम पैनालीम हजार योजन जानेपर चारों दिशा उन्हीं जगनिके अन्दर चार दर-वाजा आते हैं वह दरवाजा आठ योजनके उंचे चार योजन के चौड़े दरवाजा उपर नवभूमि आर मण्डपमट छत्रचमर नवजा और आठ आठ मण्डपक ८ । दरवाजाक टाना नके हो दो नौनगा के उन्हींके उपर प्रागाद नौगण चन्दनके कलमें नगा राज आदि राज रूपक इन्द्र और मनोहर रूपवाली वृत्तल राम गुजाला २

• पुर दशम विजय नामका दरवाजा है

• दशमदिशम विजयन्त नामको दर

दक्षिणकी तर्फ विजयन्त नामका दरवाजा है । पूर्व पश्चिम दोनों खंडमें हजार हजार देश मीलाके दक्षिणभरतके तीनों खंड १६००० देश है इसी माफिक उत्तरभरतमें भी १६००० देश है इन्हीं भरतक्षेत्रमें कालकि हानि शृद्धिरूप सर्पिणी उत्सर्पिणी मीलके कालचक्र है वह देखो. छे आरोंका धोकडामें । । सर्पिणीमें २४ तीर्थकर १२ चक्रवरत ६ बलदेव ६ वामुदेव प्रतिवामुदेव नियमत होते हैं । इति.

(२) एरभरतक्षेत्र—भरतक्षेत्रकि माफिक है परन्तु मक्षेत्रकि मर्यादाकारक चुलहेमवन्तपर्वत है और एरभरतक्षेत्र मर्यादाकारक सोखरीपर्वत है शेष परावर है इति.

(३) महाविदह क्षेत्र—निषेड और निलयन्त के पर्वतोंके बिचमें महाविदहक्षेत्र है वह पलंक के मंस्थान है परन्तकि ३२ विजयमें अलंकृत है । अगर महाविदहक्षेत्र न्याय विभागकर दिया जावेमे तो १० पूर्व विदह १० पश्चिम विदह १० देवराष्ट्र १० उत्तराष्ट्र

विदहक्षेत्रके मध्य भागमें मेरु पर्वत पृथ्वीपर १००० गी ६ विष्णुगाला ६ उन्नी के पूर्व पश्चिम दोनों तर्फ शर्या शर्याम ३३३३ योजनका भद्रगालवन है उन्हीमें दोनों तर्फ ६ पश्चिम गाला गाला विजय है अर्थात् पूर्व विदहक्षेत्र १ विजया और पश्चिम विदहक्षेत्र १६ विजय है ।

मेरु पर्वत १,००० योजनका है उन्हीमें उत्तर दक्षि

लेखनाम	दासियोंनंग परलापरा	धाह	जीवा	धनुषपीठ
दासिगभरन	२३२ जो० ३	०	६७४८+१२	६७६६+१
उत्तरभरन	२३२ + ३	१२६२+७॥	१४४७१+६	१४४२८+११
रमययल	२४ १ + ५	६७५५+३	३७६७४+१६	३८७४०+१०
रमिगभरन	- २४ . ४	६३३६१+६	७३६०१+१७	८४०१६+४
मर्गाभरन	२३६ - ५ + १	३३७६७+७	१०००००	१५८११३+१६
दत्तभरन	११ - २० ६	०	५३०००	६०४१८+१२
उत्तरभरन	११ - २० ६	०	५३०००	६०४१८+१२
रमयभरन	- २४ - ४	१३३६१+६	७३६०१+१७	८४०१६+४
रमयभरन	- २४ - ४	६७५५+३	३७६७४+१६	३८७४०+१०
दासिगभरन	२३२ + ३	१२६२+७॥	१४४७१+६	१४४२८+११
उत्तरभरन	२३२ + ३	०	६७४८+१२	६७६६+१

निकलने हों देवकू उभरकू युगलघेय और विजयके विचमें मर्यादा करनेवाले हस्तिके दन्तके आकार मेरुपर्वतके पास आयलागे हैं.

(४) शृतलवताद्य पर्वत हेमवय, परणवय, हरिवाप्त, रम्यरू-
वाम यह चार युगल मनुष्योंका घेय है इन्हीके मध्यभागमें
न्यार शृतल वताद्यपर्वत हैं.

(४) चितविचितादि निपेडपर्वतके पासमें और सीतानदीके
दोनों तटपर चित और विचित दो पर्वत हैं इसी माफिक निलवन्त
पर्वतके पासमें सीतौदानदीके तटपर जमग समग दो पर्वत हैं.

(१) जम्बुद्विपके मध्यभागमें गिरिराज मेरुपर्वत है. इति.

(विवरण)

(१) दो सौ (२००) कञ्चनगिरिपर्वत पचवीस जोजन
धरतिमें १०० जोजन धरतिमें उंचा मनमें ५०० जो० लम्बा
चोटा मनमें ७५ जो० उपरमें ५० जोजन विस्तारवाला है
तीनगुना जाभेरी पराद्ध मने कञ्चनमय है ।

(२) शीतल वताद्यपर्वत पचवीस गाउ धरतीमें
५ पचवीस जोजन धरतीमें उंचा पचवीस जो० विस्तारवाला है ।
इन्हीके दोनों तफे बाह ४८८ जो० १६ कला है जीवा
१०७२० जो० १२ कला धनुषर्पाए १०७४३ जो० १२ कला
है प्रत्येक वनाड्यपर्वतके अन्दर दो दो गुफावाँ हैं (१) तमस
गुफा (२) खंडप्रभागगुफा वह गुफा ५० जोजनकि लम्बी १२

(१) मद्रशालवन—मेरुपर्वतके चोतर्फ धरति उपर पूर्व पश्चिम २२००० बावीस हजार जोवन ओर उत्तर दक्षिण अठाइसो २५० जोवनका है एक वनखंड एक वेदीका चोतर्फ है श्यामप्रभाकर अर्द्धा शोभनिक है । मेरुपर्वत के पूर्व दिशा तर्फ मद्रशालवनमे ५० जोवन जावे तब एक सिद्धायतन (जिनमन्दिर) आवे वह ५० जो० लम्बो २५ जो० चौडा ३६ जो० उचा अनेक स्थभा पुतलीयों आदिसे सुशोभीत है उन्ही सिद्धायतन के तीन दरवाजा है । वह आठ जोवनका उचा ओर चार जोवनका चौडा जीमपर सुपेन गुमटकर सोभायमान है उन्ही सिद्धायतन के मध्य भागमे एक मणि-पीठ चोतरो ८ जो० लम्बो चौड । चार जो० जाडो सर्व स्नमय है । उन्ही चोतगके उपर एक देवच्छादो (जहा जिन प्रतिमा वीराजमान है उन्ही को मन गुभाग भी कहा जाते है वह ८ जो० लम्बो चौडा साधिक आठ जो० उचा उचपणे है वणन करने योग्य है उन्ही के अन्दर तिनोम्य पूजनीक तीर्थकर भगवान कि प्रतिमाया पद्मामन विराजमान है यावन धूपके कुडने आदि रहे थे । एव दाहिम एव बाँधिम एवं उत्तर अथवा च्यामे दिशाम चार जिन मन्दिर प्रवचन समझता । मेरुपर्वत मे उशान कोनमे मद्रशाल वनमे जावे तब चार नन्दा पुष्कगण भाँगे आते है पद्मा पद्माप्रभा, कुमुदा कुमुदप्रभा यह चारो ५० लम्बो २५

जो० चांडी १० जो० उढी वेदिका वनखंड तोरणादि करी
संयुक्त है उन्ही च्यार बावीसों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका
प्रधान प्रासाद (मूल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा
२५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित
है । एवं अग्निकोनमें भी च्यार बावीस है उत्पला, गुम्मा निलना
उज्जला पूर्ववत् परन्तु इन्ही बावीस के मध्य भागमे शकेन्द्रका
प्रासाद है एवं वायुकोनमे च्यार बावीस है त्रिंशा भिंगनाभा अञ्जना
अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद मिहामन सपरिवार
समभक्ता एवं नैऋतकोनमे च्यार बावीस श्रीकन्ता श्रीचन्दा
श्रीमहीता श्रीनलीता मध्यभागमे प्रासाद इशानेन्द्रका समभक्ता
बावीस-बावीस के अन्तरामे जो० मूर्ती उभिन है उन्हीं के उपर
इन्द्रका प्रासाद है भद्रशालवनमे आठ विदिशासोमे आठ
हस्तिकुट है वह ५०० जो० धरतामे २०० जो० धरतामे उचा
है मूलमे पांचसो जो० मध्यमे २०० जो० उपर ५०० जो०
विस्तारवाला है तानगुणा मूलमे ५०० परमे ५०० पश्चतर, निल
वन्त, सुहस्ति, अञ्जन भाग, कुमड, पीलास, विट्तिम, रोयण
गौर, इन्ही आठ कुटोपर उभेनाम देवता और दशनाका
भुवन रत्नमय है उन्हा देवाहा राजधाना आपना पान
दिशामे अन्य जगुाउपमे जानापर यावत् प्रत्येक देववत्
समभक्ता भद्रशालवन वृक्ष मुन्द्रा गुमावला वृक्ष कर शोभाय

मान है बहुतमं देवता देवी विद्याधरादि श्यावे है पूर्व संचित
गुण फलको भोगयते ह्ये विचरे है ।

(२) नन्दनवन-भद्रशालवनकी संधूमिमें ५०० जोजन उंचा मेरुपर्वतपर जावे वहाँ गोला बलीयाकार नन्दनवन आवे वह पांचमो जौ० बिस्तारवाला है मेरुपर्वतको चौतर्फ घीटा हुआ है अर्थात् वहांपर मेरुपर्वतकी एक मेशला निकली हुई है उन्होंके उपर नन्दनवन हैं। वेदिकावन गुंड च्यार त्रिन-
मन्दिः १६ बावी ४ ग्रामाद् शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका पूर्वभद्र
शालवनवत् गणभूजा और नन्दनवनमे ६ कुंट है नन्दनवन-
कुट्ट, मेरुकुट्ट, निषेडकुट्ट, हेमरन्न० रज्जीतहुं० रुचिव० मागर-
चित० धन्न० पल्लकुट्ट जिम्मे आठ कृष्ट पांचमो पांचयो जौ०
उंचा दावन आठो ठटपर आठ देताँका मुसन हें मेघफग,
नेधबनी, समग्र, हममाननिंदरी गर-हरेति दग्गायदेयी,
प्रक्रम० ३॥

(३) सुमानसवन—नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन
 र्वे जावे तब सुमानस नामका वन आवे । यह पांचसो जोजन
 विस्तारवाला मेरुपर्वतको चौतर्फ घेरे रखा है वेदीकावन
 छ चार जिनमन्दिर १६ बाबी शकेन्द्र इशानेन्द्रका ४
 साद पूर्ववत् समझना चावत् देवतादेवी आते हैं।

(४) पंडकवन—सुमानसवनमे ३६००० जोजन उर्ध्व
 वे तब मेरुपर्वतके शिखर उपर पंडकवन आता है ४६४
 १० चक्रवाल चुडी आकार मेरुपर्वतकी चुलका (१२ जोजन)
 में चौतर्फ घेरे रखा है । वेदीकावन खंड चार जिनमन्दिर १६
 बाबी शकेन्द्र इशानेन्द्रका चार प्रासाद पूर्ववत् समझना ।
 डकवनके मध्यभागमें मेरुचुलका है वह ४० जोजनकी
 चौ है मूलमें १२ मध्यमें ८ उपरमें ४ जोजन विस्तारवाली
 माधिक तीनगुनी पगढ़ि । मय वैन्द्रीय रत्नमय है । एक
 दिक्का वनखंडमें बारी है । उपरका तलो मणिजडित है
 मध्यभागमें एक मिदायवन एक गाडक लम्बा आटा गाडका
 गोडा देशोना गाडका उचा घनेक म्यानकर शोभनीक है
 मय मणिपट्ट देवन्दरा रंग वस्त्रमन जिनमतिमयी वारन
 एक उचा आदि देवतादेव द्वापर आते हैं ता नयिधरमुनि
 जाते हैं तिलोक्क पृथक क नयिकोंका मेयानक करते हैं।

पंडकवनमें चार दिशाओंमें चार अतिशय शलाखों

३४ अपमकुंड एवं ५८ सर्व मीलके ५२५ कुंड है विमं
 वर्षधरपर्वतोका ५६ शोलायस्कारोका ६४ च्यार गजदन्ता
 ३० नन्दनवनका = भद्रशालवनका = एवं १६६ कुंड
 कुंड ५०० जोजनका उचा ५०० जो० मूल पद्ला
 २५० जोजन विस्तारवाला है और गजदन्ताके २ नन्दनवन
 ? एवं ३ कुंड १००० जो० का उचा तथा मूलमे १
 जो० का पद्ला शीखरपर ५०० जो० पद्ला है एवं १६६

चाँतीम बैतायका ३०६ कुंड २५ गाउका उचा ६
 मूल पद्ला तथा शीखर पर १२॥ गाउका पद्ला है । ज
 पीठका = मामली पीठका = और अपमकुंड ३४ एवं ५०
 आठ जोजनका उचा आठ जोजनका मूलमे पद्ला ६
 शीखरपर ४ जोजका पद्ला है एवं कुल ५२५ कुंड ममका

उपर जो ५२५ कुंड बड़े है इन्हीमे ७६ कुंड प
 त्रिनमंदिर है जोष ४४६ कुंड पर देवता और देवीयोका ३
 है यथा-छे वर्षधरपर्वतो पर छे त्रिन मन्दिर शोलायन्
 पर्वतो पर २६ त्रिनमन्दिर । च्यार गजदन्ता पर च्यार त्रि
 मन्दिर आठ देवता आठ उनाउम और चाँतीम बैताउपर
 पर ३६ त्रिनमन्दिर एवं कुल ७६ त्रिनमन्दिर है इन्हीके निश
 नउगानवनम नन्दनवनम - मुमानमवनम - पद्ला उना
 नदर - मूल कुल - ५२५ कुंड पर - मामली उचा पर ।

१५ मीलाके ५५ जिनमन्दिर साम्यता है परिमाण—दे वर्षधर
 लावम्कार चार गजदन्ता चार भद्रनाल चार नन्दनवन
 चार सुमाननवन चार पटनवन एवं ४२ स्थानके जिनमन्दिर
 चार पचास जो० लम्बा पचास पचास जो० चौड़ा तृतीय
 तीन जो० उचा अनेक ग्याभ पुनलीया तार आदिमे सन्धा
 शोभित गर्व रत्नोमय है उन्ही जिनमन्दिरोंके तीन तीन
 रखाजा है प्रत्येक दरवाजा आठ जोजनका उचा चार जो०
 हूला तौरसे ग्याभ आदिमे सन्धा मनोहर है.

चौतीस बैताल्य आठ देवहूत आठ उत्तरहूतके पीठका
 गया जम्बुद्वीपका एक नामलीवृक्षका एक और मेरुचुटुकाका एक
 एवं ५३ जिनमन्दिर एक कोषका लम्बा आठ कोषका पहला
 १४४० धनुषका उंचा गर्व रत्नमय है इन्ही गर्व सिद्धायतनों
 अर्थात् जिनमन्दिरोंमें श्रीलोचय पूजनिक तीर्थकरोंकी शान्तमुद्रा
 प्रमाणनमय स्तुतियों है उन्हींको मेधाभाक्ति अर्चनादि देवदेवी
 विद्याधर करते हैं.

शेष ४०६ कुट तथा २०० कश्चनगिरि ४ घृतलवैताल्य
 ४ चित्तिचिन्त जमगममग एवं मय ६५० स्थानपर देवीदेवनोंका
 आवास भुवन है इति

६ तीर्थधार जम्बुद्वीपम तीर्थ . है वर लौकिक
 साम्यता तीर्थ है जिस समय चक्रवर्त खट साधनेकी जाते है

तब वहाँपर ठेरते है यह तीर्थार्घ्यदायक देवोंका अष्टमत्प करते है या तीर्थंकरोंका जन्माभिषेकके लिये उन्ही तीर्थोंका उत्सव आदि देव लाते है इत्यादि यह तीर्थका नाम-मागव, वरदाम और प्रभाम एवं चक्रवरतकि ३४ विजयमें तीन तीन तीर्थ होनासे १०२ तीर्थ है.

(७) श्रेणी-जम्बुद्विपमें श्रेणी १३६ है यथा वृताञ्ज-गिरि २५ जोजनका धरतिमें उंचा है उन्ही परतके उपर धरतिमें १० जोजन उपर जाये तब विद्याधरोंकी २ श्रेणि (१) दक्षिण श्रेणि जिम्में ५० नगर है (२) उत्तर श्रेणि जिस्में ६० नगर आते है उन्ही विद्याधरोंकी श्रेणिमें दश दश जोजन उंचा जाये तब अभियोग देवोंकी दो दो श्रेणि आति है (१) दक्षिण श्रेणि (२) उत्तर श्रेणि वहाँपर च्यवनदेवना पूर्व कीरि हवे मुकृतके फल भोगवते है एवं ३४ वृताञ्जपर व्यास व्यास श्रेणि है सर्व मालिके १३६ श्रेणि होती है इति.

(८) विजयद्वार-जम्बुद्विपमें ३० विजय द्वार पर चक्र-वर्तन के गडकों विजय करने के अर्थान् है मरुतम एक छव-गन करने है

महाविदेहके एक है यान्तु उन्हांमें ३० विजय अलग अलग है जिम्में १६ विजय मेरुपर्वतमें पुरीकी तक है और १६ विजय मेरुपर्वतमें पश्चिमकी तक है जो पूर्व महाविदेहमें १६

विजय है उन्हीके विचमें सीता नाम नदी है चास्ते सीतानदीके
उत्तर तटपर = विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है
इसी नातीक पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनों तटपर आठ
आठ विजय है एवं विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हीका नाम-

पूर्व विदेह सीतानदी.		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट.	उत्तर तट.	दक्षिण तट.
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पद्म विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ..	सुवच्छ ..	सुपद्म ..	सुविप्रा ..
३ महाकच्छ ..	महावच्छ ..	महापद्म ..	महाविप्रा ..
४ कच्छवती ..	वच्छवती ..	पद्मावती ..	विप्रावती ..
५ आश्रिता ..	गन्ता ..	मंगला ..	वग्गु ..
६ मंगला ..	गन्धर्व ..	हनुमता ..	सुवग्गु ..
७ पुण्डरीका ..	गन्धर्व ..	निर्मला ..	गन्धीला ..
८ पुण्डरीका ..	गन्धर्व ..		

चौतीस तमस गुफा ३४ खंडग्रमाणुफा ३४ राजधानी ३४
नगरीयों ३४ कृतमाली देव ३४ नटमाली देव ३४ अपमंडू
३४ गंगानदी ३४ सिन्धुनदी यह सर्व पदार्थ सास्वता है
शेष नाम देखो जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसे इति.

(६) द्रव्यद्वार-जम्बुद्विपके अन्दर शोला द्रव्य है यथा
पद्मद्रव्य, महापद्मद्रव्य, तीर्णचन्द्रद्रव्य, केशरीद्रव्य, महापुंडरिकद्रव्य,
पुंडरिकद्रव्य, यह छे द्रव्य छे वर्षधर पर्वतोंके उपर है और पांच
द्रव्य देवकृत युगल क्षेत्रके अन्दर है निषेडद्रव्य, देवकृतद्रव्य,
सूर्यद्रव्य, वलसद्रव्य, विद्युत्प्रभद्रव्य तथा पांच द्रव्य उत्तरकृत युगल
क्षेत्रके अन्दर है निलावन्तद्रव्य, उत्तरकृतद्रव्य, चन्द्रद्रव्य एगवर्त
द्रव्य मालवन्तद्रव्य एवं सर्व १६ द्रव्य जम्बुद्विपके अन्दर है ।

(१) पद्मद्रव्य—चुलहेमवन्त पर्वत १०५२-१२ पहल
है जिन्होंका मध्य भागमे पद्मद्रव्य है वह पर्व पद्ममे एक हजार
जोजनको, लम्बा और उत्तर दक्षिणमें ५०० जोजनको चांडो
दश जोजनको उढो परिपृण निमेल वाणीमे भरा हुआ है वह
उह अनेक कमलों का अन्धा शोभनिक है । कमलोंका
विवरण ।

द्रव्यके मध्य भागमे श्रीदेवीका उठा कमल है उन्हीं के
चौनके भंडागे देवोंका १०० कमल है, चार कमल मेहनरीक
देवीयोंका है, मान कमल श्रीदेवीके अनिकाके आधिपति देवोंका

तोरण ध्वज आदि चित्रोंसे सुन्दर है उन्हीं भुवनके मध्यभागमें एक मणिपीठ चौतरा है ५०० धनुष लम्बा २५० धनुष चौड़ा उन्हीं चौतरा उपर एक देवशय्या है यह वर्णन करनेयोग है यावत् वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेवीके साथ पूर्वउपार्जित शुभ फलोंको भोगवती हुई आनन्दमें रहती है। यह पद्मद्रहके बाह्यार एक पद्मवेदिका और एक वनखंड कर बीटा दूबा है शेषाधिकार नदीद्वारमें लिखेंगे इसी माफीक सीखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रह भी समझना परन्तु उन्हींके देवी लक्ष्मिदेवीका भुवन या कमल है इसी माफीक देवकूरु उत्तरकूरु युगल क्षेत्रोंमें १० द्रहका भी वर्णन समझना परन्तु उन्हीं द्रहोंके बाह्यार वेदिका दो दो है कारण उन्हीं द्रहोंमें सीता और सीतोदानदी वेदिकाको भेदके द्रहमें आति है और वेदिकाको भेदके द्रहसे निकलती है वामने वेदिका दो दो है शेष अधिकार पद्मद्रह माफीक समझना । १२ ।

१३ महापद्मद्रह नामके भुवनके उपर मध्यभागमें १०० जो नद्या और १० जो चौड़ा दश जो उठा महापद्म नामका द्रह है उन्हींपर २ नामा देवीका कमल तथा भुवन है परन्तु कमलका मान दुगुणा समझना इसी माफीक रूपिपर्वतपर महापुंडरिकनामा द्रह है परन्तु उन्हींपर बुद्धिदेवीका कमल और भुवन है देवी माफीक समझना । १४ ।

चुलहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रभा-
 कुंडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिमके
 लवणसमुद्रमें परन्तु वहां तमसप्रभागुफाके निचासे तथा कुंडका
 नाम सिंधुकुंड तथा सिंधुदेवीका भुवन समझना एवं दोनों
 नदीयोंका परिवार २८००० नदीयों हैं । वह पर्वतपर निक-
 लती आदा जोजनकी उँडी और ६। जोजनकी विस्तारवाली
 थी पीछे क्रमसर बढ़ते बढ़ते जहां लवणसमुद्रमें मीली है
 वहांपर पांच गाउकी उँडी और ६२। जो० विस्तारवाली हुई थी।

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता
 नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती है यह
 नदी हेमवय युगलक्षेत्रमें गई है अधिकार गंगानदीके मार्फक
 परन्तु नीकलनी एक गाउकी उँडी १२॥ जोजनका विस्तार
 वाली है तथा रोहीतप्रभामकुंडका विस्तार द्गुण १२० जोज-
 नका समझना जहां लवणसमुद्र नाम १० गाउकी उँडी
 १०॥ जोजन विस्तारवाली है उर्मा मार्फक महाहेमवन्तपर्वतपर
 महा पद्मद्रहके रोहीत प्रभासनामा कुंडमें पडती है यह
 महा रोहीत प्रभासनामा कुंडका विस्तार २८००० नदी-
 योंका परिवार समझना २८००० नदीयों

महाहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता
 नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती है यह

निलयन्तपर्वतके केशरीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकन्ता और रुपीपर्वतके महापुंडरिकद्रहके दक्षिणका तोरणसे नारीकन्ता यह दोनों नदीयों रम्यक्वास युगलक्षेत्रमें कुंड और देवीका नाम नदी मार्गीक विस्तार परिवार देखो यंत्रसे.

रुपीपर्वतपर महापुंडरिकद्रहके उत्तरके तोरणसे रुपकुव नदी और सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहका दक्षिणका तोरणसे सुवर्णकुलानदी यह दोनों नदी एरणवय युगलक्षेत्रमें गढ़ है परिवारादि देखो यंत्रसे.

सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तोरणसे रता रक्तवंति यह दो नदीयों एरणवक्षेत्रमें गंगा मिन्धुम चोदा चोदा हजार नदीयोंके परिवारमें लक्षणममुद्रमें प्रवेश किया है नदीके मार्गीक कुंडका या देवीयोका नाम ममकन कुंड या भुरनका मन्विकार ममादरी मार्गीक है

के. ए. ए. म. ए. न. मु. नि. न.

नं० ३ - नं० ४ - नं० ५ - नं० ६ - नं० ७ - नं० ८ - नं० ९ - नं० १० - नं० ११ - नं० १२ - नं० १३ - नं० १४ - नं० १५ - नं० १६ - नं० १७ - नं० १८ - नं० १९ - नं० २० - नं० २१ - नं० २२ - नं० २३ - नं० २४ - नं० २५ - नं० २६ - नं० २७ - नं० २८ - नं० २९ - नं० ३० - नं० ३१ - नं० ३२ - नं० ३३ - नं० ३४ - नं० ३५ - नं० ३६ - नं० ३७ - नं० ३८ - नं० ३९ - नं० ४० - नं० ४१ - नं० ४२ - नं० ४३ - नं० ४४ - नं० ४५ - नं० ४६ - नं० ४७ - नं० ४८ - नं० ४९ - नं० ५० - नं० ५१ - नं० ५२ - नं० ५३ - नं० ५४ - नं० ५५ - नं० ५६ - नं० ५७ - नं० ५८ - नं० ५९ - नं० ६० - नं० ६१ - नं० ६२ - नं० ६३ - नं० ६४ - नं० ६५ - नं० ६६ - नं० ६७ - नं० ६८ - नं० ६९ - नं० ७० - नं० ७१ - नं० ७२ - नं० ७३ - नं० ७४ - नं० ७५ - नं० ७६ - नं० ७७ - नं० ७८ - नं० ७९ - नं० ८० - नं० ८१ - नं० ८२ - नं० ८३ - नं० ८४ - नं० ८५ - नं० ८६ - नं० ८७ - नं० ८८ - नं० ८९ - नं० ९० - नं० ९१ - नं० ९२ - नं० ९३ - नं० ९४ - नं० ९५ - नं० ९६ - नं० ९७ - नं० ९८ - नं० ९९ - नं० १००

नं० १ - नं० २ - नं० ३ - नं० ४ - नं० ५ - नं० ६ - नं० ७ - नं० ८ - नं० ९ - नं० १० - नं० ११ - नं० १२ - नं० १३ - नं० १४ - नं० १५ - नं० १६ - नं० १७ - नं० १८ - नं० १९ - नं० २० - नं० २१ - नं० २२ - नं० २३ - नं० २४ - नं० २५ - नं० २६ - नं० २७ - नं० २८ - नं० २९ - नं० ३० - नं० ३१ - नं० ३२ - नं० ३३ - नं० ३४ - नं० ३५ - नं० ३६ - नं० ३७ - नं० ३८ - नं० ३९ - नं० ४० - नं० ४१ - नं० ४२ - नं० ४३ - नं० ४४ - नं० ४५ - नं० ४६ - नं० ४७ - नं० ४८ - नं० ४९ - नं० ५० - नं० ५१ - नं० ५२ - नं० ५३ - नं० ५४ - नं० ५५ - नं० ५६ - नं० ५७ - नं० ५८ - नं० ५९ - नं० ६० - नं० ६१ - नं० ६२ - नं० ६३ - नं० ६४ - नं० ६५ - नं० ६६ - नं० ६७ - नं० ६८ - नं० ६९ - नं० ७० - नं० ७१ - नं० ७२ - नं० ७३ - नं० ७४ - नं० ७५ - नं० ७६ - नं० ७७ - नं० ७८ - नं० ७९ - नं० ८० - नं० ८१ - नं० ८२ - नं० ८३ - नं० ८४ - नं० ८५ - नं० ८६ - नं० ८७ - नं० ८८ - नं० ८९ - नं० ९० - नं० ९१ - नं० ९२ - नं० ९३ - नं० ९४ - नं० ९५ - नं० ९६ - नं० ९७ - नं० ९८ - नं० ९९ - नं० १००

एवं सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी है तथा यंत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हैं।

महाविदेहक्षेत्रके चार विभागमें ३२ चक्रवर्तकी विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्यंत पेशते लिख आये हैं और १२ अन्तरमें पारह अन्तर नदी है यथा- गृहवन्ति, द्रहवन्ति, पंकवन्ति, तंतजला, मंतजला, उगमजला, घीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि, गंभीरमालनि यह १२ नदीयों प्रत्येक नदी १२५ जोजनकी चौड़ी है अठाइ जो० उड़ी है १६४६२ जोजन और दो कलाकी लम्बी है एवं सर्व मीलके १४५६०६० नदीयों जम्बुद्विपमें हैं यह थोकड़ा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक समझ शके वास्ते संक्षेपमें ही लिखा गया है विशेष विस्तारकि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीधूत श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥



१००० जोजन उड़ा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चोती पचणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चौतर्फ दश दश हवा जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उड़ा है वहासे पचणवे हजार जोजन जानेपर पातकि खंड द्विप आता है लवणसमुद्रके चारों दिशामे चार दरवाजा है वह जम्बुद्विप माफीक समझना ।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जो १०००० जोजनका गो चक्राकार १००० जोजनके उड़स पाणी है उन्ही लग समुद्रके मध्यभागमे चार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिश बड़वा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पा कलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरदिशामे इश्वर पात कलशो। यह चारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लवण मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अघोष तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर किटी एक हजार जोजन कि जड़ा है कलशांका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पानी है । एकैक कलशाके विषये अन्तर २१००६५ जोजनका है उन्ही प्रत्येक अन्तरगमे १६२१ हजार कलशा है अन्तरगमे ७८८४ छोटे कलशा है १११ एकैक अन्तरगम कलशाकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २०१ २१६-२१७ २१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ १११ नव श्रेणिका १८७ कलशा है चार

जोजनका पहला है ४११०६६१ जोजन साधिक परदि है
 उन्ही घातकिखंड द्विपमे उत्तर दक्षिण लम्बा च्यार लख
 जोजन । पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहला मूलमें एक
 हजार जोजन चोडा यावत् सीसरपर पांचसो जोजन परिमा-
 सवाले दो इच्छुकार पर्वत आजानेसे घातकिखंडके दो विभाग
 हो गये हैं (१) पूर्व घातकिखंड (२) पश्चिम घातकिखंड
 इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेरुपर्वत हैं वह मेरुपर्वत एक
 हजार जोजन घरतीमें उडा और ८४००० जोजन घरतीमें
 उंचा एवं ८५००० जोजनका प्रत्यक मेरु हैं । वह मेरुपर्वत
 च्यार बन करके अलंकृत हैं दूसरे पर्वत या वासा आदि सर्व
 जम्बुद्विपसे द्गुणा ममभना परन्तु क्षेत्रका लम्बा चोडा अधिक
 हैं और घातकिखंड द्विपमें १२ चन्द्र और १२ सूर्य सपरिवार
 हैं शेषाधिकार अडाइ द्विपका यंत्रमें लिखा जावेगा इति ।

घातकिखंड द्विपके चार्तरफ गोल चलीयाकार ८००००
 जोजनके विस्तारवाना कालोटाद्वि नामका समुद्र है वह चार्तरफ
 आठ लख जोजनका पहला है ८५००० ५ जोजन साधिक
 परदि है एक पश्चात्त्यर पोटिका एक पनखंड च्यार दग्वाजा
 और दग्वाजे दग्वाजे अन्तर २०८०६८६ जोडा है वह समुद्र
 दक्षर जोजनका उडा है अन्डा जलमे परिपूर्ण भरा हुआ ।

कालोटाद्वि समुद्रके चार्तरफ गोल चलीयाकार पुष्कर
 नामका द्विप है वह १६००००० जोजनका चार्तरफे विस्तार-

ममुद्र भयान् अदाइदिप दोय ममुद्रको समय क्षेत्र भी कहागो
 ई कारन मिद होता है मो इन्ही समय क्षेत्रमे ही होगा है
 इन्ही अदाइदिपके क्षेत्रका परिमाणः—

- १ ममुद्रिप पूर्व पश्चिम मीलके १ लख जो०
- २ लगनममुद्र " " " ४ लख जो०
- ३ पातकिमांड " " " ८ लख जो०
- ४ कालोइदिगमु० " " " १६ लख जो०
- ५ गृन्कदंदिप " " " १६ लख जो०

एवं मनुष्यलोक-समयक्षेत्र-अदाइदिप ४४ लख जो०
 नका है किन्नाकि परदि १४२३०२४८ जोत्रन माथिई है
 अदाइदिपमें जो माप्य पदार्थ है मो यंत्रद्वारा बनताकि
 जाता है ।

पदार्थ	१० ममुद्रिपमें	१० पातकिमांड.	०॥ गृन्का
२४४४४	१	४	२
१४४४४४४	४	१६	१३
४४४४४४४४	१६	६४	३३
४४४४	४	४	८
१४४	१६	१६	१४
४४४४४	४	१६	१८०

शेष द्विपसमुद्रोंके वेदिका भोर वनसंड है परिमाण तब
चन्द्र सूर्य यंत्रमें लिखते है जीतना चन्द्र है इतना ही सूर्य
एकेक चन्द्र सूर्यका परिवारमे २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६६७१
कोडा कोड तारोंका परिवार समझ लेना ।

अट्टाद्विपके बाहार जोतीपीयों की चाल नदी है मनु
ष्यका जन्म मृग्यु नदी गान वित्त वर्षाद बादर अग्नि नदी
नदी है ।

नाम	विम्भारपणो	चन्द्रसूर्य
जम्बुद्विप	१ सप्त जोजन	२
सवणमवृट	२ " "	४
घानर्षिक	४ " "	१२
कालाशदिमवृट	८ " "	४२
तृणवृट	१६ " "	१४४
तृणवृट	३२ " "	४६२
तृणवृट	६४ " "	१६८२
तृणवृट	१२८ " "	१०३६
तृणवृट	२५६ " "	१६८२
तृणवृट	५१२ " "	६६८२

द्विप	१०२४ " "	२८८२८८
" समुद्र	२०४८ " "	७७६४२४
द्विप	४०९६ " "	२६६११२०
" समुद्र	८१९२ " "	६०८४६३२

इति गान द्विप गान समुद्र ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सद्यम् ॥

धोकाडा नम्बर ३

(मृग धी जीयाभिगम प्र० ३)

—

—

—

—

—

—

—

—

गिरि और उत्तरदिशामें उत्तराञ्जनगिरि है प्रत्यक्ष अञ्जनगिरि
१००० जो० घरतिमें ८४००० जो० घरतिसे उंचा है मूलमें
साधिक दश हजार जो० घरतिपर दश हजार जोजन और
सीएरपर एक हजार जोजनके विस्तारवाला है। साधिक
तीनगुणी परदि है सर्व अरिष्ट (श्याम) रत्नमय है।

प्रत्यक्ष अञ्जनगिरिके सीएरका तला शममादलका तल
मार्जिक साक है। सीएरके तलाका मध्यभागमें एक विद्या
घनन अर्थात् त्रिनमन्दिर है वह १०० जो० लम्बो ५० जो०
चोटी ७२ जो० उंचा अर्द्धा मुन्दर समगिय है उन्ही त्रिन
मन्दिरके चारो दिशामें चार दरवाजा है वह १६ जो०
उंचा ८ जो० पहला चारो दिशाके दरवाजोके आगे च्या
मुखमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोटा १
जोजन साधिक उंचा है। चार दरवाजा १६ जो० उंचा
८०० चोटा उन्ही मुखमंडपके आगे प्रेक्षापथमंडप है वह १०
जो० लम्बा ५० जो० चोटा साधिक १६ जोजन उंचा
उन्हाके अन्दर घनन विष्णुश्यामा मणिपिट नीलगे

दशमवर्ष न नमन ८१२१५ नया रत्नका अष्ट
१००० घंटा १००० नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५
१००० घंटा १००० नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५
१००० घंटा १००० नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५
१००० घंटा १००० नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५
१००० घंटा १००० नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५ नमन ८१२१५

दिन प्रतिभापञ्चमन शान्तमुद्रा स्थुभ सन्मुख मुख किया हवे
 प्रियमान है । उन्दि स्थुभसे आगे एक मणिपिठ चानरो है
 पर आठ जोड़नके दिग्गारवाला उन्नोंके उपर चैन्य वृक्ष आठ
 जोड़नको उचो है धर्मन करने योग्य है उन्नोंके आगे योग
 की आठ जोड़नका मणिपिठ चानारा है उन्नोंके उपर मोन्द
 अथ ६४ जोड़नकी उची ओर भी छोटी छोटी विजय विज-
 योन् अथ है उन्नोंके आगे नन्दा पुष्करणी दार्दी १०० जो-
 लार्दी ५० जो० चोर्दी १० जो० उर्दी अनेका कामल दामो-
 दीदा लीला समर छत्र अथ वर शोभनिक है । उर्दी दार्दी
 के अगो दिशा अथार दनगैर है या मूल शिष्टासनके एक
 दिशा के पदार्थ धारा है लगे ही अगो दिर्गो गामनना ह-
 र्द दिशाके दनगैरके ३५ ... मान अथार १२०००
 जोरगा अथार न पन ... है ... अथार ...
 दिः ...
 ११ ...

चार अञ्जनगिरि के अन्तरामे चार रतीगीरापर्वत हैं वह अड़ाइतो जोवन धरतिमे १००० जों० उचा सर्व स्थान हजार जोवन पदूला पलीक संस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के चारों दिशामें चार चार राजधानीयों एवं १६ राजधानी हैं वह प्रत्यक राजधानी १००००० जो० के विस्तारवाली हैं ३१६२२७।३।१२=।१३॥-१-१-१-६ भाभेरी परद्वि है पावत् राजधानीका वर्णन माफीक समझना जिस्मे इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके = राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रमेहपियोंकी हैं और अग्नि और वायुकोन रतीगीराके = राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रमेहपियोंकी हैं नन्दीश्वर द्विप धात्री हैं तब वह पर ठेरती हैं अब नन्दीश्वर द्विपका सर्व पदार्थ कहते हैं।

४ अञ्जनगिरिपर्वत अञ्जनगन्धमय.

१६ दधिमुखापर्वत अंवरन्ध्रमय.

३० कनकगिरिपर्वत कनकमय

४० विनमन्दिन मय व नीमय

६६४६ पावन मय १००००० १०००००००

१००० सुखमय १०००००० १०००००००

१००० प्रेक्ष्य धाममय

१००० १५००

थोकडा नं. ५

—ॐ—

(सूत्रश्री सृगडायांगजी श्रु० २ अ०३)

—ॐ—

(आहार)

जीवात्मा मण्डानन्द निजगुणभृता नदा यनाहारीक
 है या निधन नयका वचन है । और जीवके यनादि कालमें
 कर्मोंका संगोग होनामें भिन्न भिन्न योनिमें नया नया जन्म
 धारण करने एवं पुद्गलोंका आहार करना है यह व्यवहार नया
 वचन है । व्यवहार नयमें जीव समर्पण की प्रवृत्ति करने हुए
 के कर्मद्वय भी होता है उन्हीं कर्मोंका फल कल्लामें पुनः
 मृत्यु आरम्भ होना होता है जो कि कर्मोंका फल नया
 वचन है ।

- (२) मूलपीया—मूलमे बीज जैसे कन्दा मूलाके
 (३) पोरपीया—गाठ गाठमे बीज इक्षुआदिमे
 (४) खन्धीया—गद् चीणादिमे

इन्ही बनास्पनिकायके उत्पन्न होनेका स्थान दोष है

(१) स्थलमे (२) जलमे जिसमेपेम्पर स्थलमे उत्पन्न होने
 है उन्हीका अधिकार लिखा जाते हैं.

पृथ्वीयोनिषा इष पृथ्वीमे उत्पन्न होता है तब पेदना
 पृथ्वीकायके खग्धपुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीर बन्धना
 है बादमे छे काया के जीवोंके मुकेलमे पुद्गलोंका आहार
 लेने है वह आहार अपने शरीरपणे परिणमाने हवे शरीरका
 वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होने है यह प्रथम अज्ञा-
 पक हवे । १ ।

पृथ्वीयोनिषा इष मे इन उत्पन्न होता है तब पेदले
 उत्पन्न स्थानके खग्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धने है
 बादमे छे काया के जीवोंके मुकेलमे पुद्गलोंका आहार लेने के अपना
 शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होने है । २ ।

इस से जल उत्पन्न होने है तब पेदले अपने
 उत्पन्न स्थानके खग्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धने है बादमे
 छे काया के जीवोंके मुकेलमे पुद्गलोंका आहार लेने के अपना
 शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होने है । ३ ।

२-ही कृष्णका जन्म गीता है बादमें मानाके दूध मर्षीका आहार
 रक्षा है धर्म नाना प्रकारके, अयमथावरोके, धर्मिणो, दुष्टानोका
 भक्षण यह के, आपने धर्मिण्यका धर्ममन्त्र इस धर्मो नाना प्रकार-
 रक्षा मनाता है । ७४ ।

इसी धर्मिण्य, अलङ्कार नीच परन्तु जन्मलो पाप्मिण्य
 आहार लेके है । ७५ । यदि गीता धर्म, धर्मलो आहार ।
 धर्मलो आहार लेके । ७६ । यदि धर्मलो आहार धर्मलो आहार
 । ७७ । यदि धर्मलो आहार धर्मलो आहार । ७८ । यदि धर्मलो आहार
 धर्मलो आहार । ७९ । यदि धर्मलो आहार धर्मलो आहार । ८० ।

इति धर्मो आहार धर्मो धर्मलो आहार धर्मलो आहार ।

११ धर्मो आहार धर्मो धर्मलो आहार धर्मलो आहार ।
 १२ धर्मो आहार धर्मो धर्मलो आहार धर्मलो आहार ।
 १३ धर्मो आहार धर्मो धर्मलो आहार धर्मलो आहार ।
 १४ धर्मो आहार धर्मो धर्मलो आहार धर्मलो आहार ।

वेमं पृथ्वी योनियावृक्षमे २१ अलापक हवे है इसी
माफीक उदक (पानी) योनियावृक्षमे ० भी २१ अलापक
हैना परन्तु इकरीममा अलापकमे भूइफोडाके म्यान उत्पत्तादि
कमल समझना एवं ४२ अलापक हवे ।

पृथ्वी योनियावृक्षमे अमकाय उत्पन्न होती है । १ ।
वृक्ष योनियावृक्षमे अमकाय उत्पन्न होती है । २ । वृक्ष योनि-
यावृक्षमे मृत्तादिया दश वस्तु उत्पन्न होता है । ३ । एवं
अज्ञोराका ३, वृणका ३, औषदीका ३, हरिकायका ३, भू-
फोडाका १ एवं १६ इसी माफीक उदक योनियाका भी १६
अलापक मीलाके ३२ अलापक हवे ।

वेद मोहनिय कर्मोदय मनुष्यको मधुन संज्ञा उत्पन्न होती
है तब मि के माथ मधुन कमे मेवन करने है उन्ही मन्थ
मानाका गंड पिताका शुक्र के माथमे योग होते है उन्हीके
अन्दर जीव उत्पन्न होते है यह मिवेद पुष्पवेद नपुंसकवेद
उत्पन्न होते ही पहला मानाका गंड पनाका शुक्रका आडा
लेना है व डमे माना कि नार नर नर न नारी के माथ
मवन्ध मोलान नर नारी के नर नारी के नर नारी के नर नारी के
एक विचार उक्त नर नारी के नर नारी के नर नारी के नर नारी के

अस स्थावर जीवोंका अचित तथा सचित शरीरमें अग्नि-
काय उत्पन्न हवे । ८८ । असस्थावर योनिया अग्निमें अग्नि
उत्पन्न हवे । ८९ । अग्नि योनिया अग्निमें अग्नि उत्पन्न होती
है । ९० । अग्नि योनिया अग्निमें, असस्थावर जीव उत्पन्न
होता है । ९१ ।

असस्थावर जीवोंका सचित अनित शरीरमें वायुकाय
उत्पन्न होती है । ९२ । असस्थावर योनिया वायुकायमें वायु-
काय उत्पन्न होती है । ९३ । वायु योनियावायुमें वायुकाय
उत्पन्न होती है । ९४ । वायु योनियावायुकायमें अस स्थावर
उत्पन्न होता है । ९५ ।

अस स्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमें पृथ्वीकाय
उत्पन्न होती है । ९६ । अस स्थावर योनिया पृथ्वीकायमें
पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९७ । पृथ्वी योनियापृथ्वीमें
पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९८ । पृथ्वी योनियापृथ्वीकायमें
अस स्थावर उत्पन्न होता है मय स्थानपर उत्पन्न होता है । वह
पेदले अपना उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुटलोंका आधार लेता
है बादमें जे कायाके गरीरके मुकुलगे पुटलोंका आधार लेके
अपने गरीरका वन, गन्ध मय स्थाने नानाप्रकारके बनाने है ।

नागका कूर्माय उत्पन्न होते हैं । ९९ । देवना शय्यामें
उत्पन्न होते हैं । १०० । अति आहार अन्नायक ।

हे भगवान्मनु यह उपर निम्न योनिमें परिभ्रमण करता
 स्वयं जीव स्वनादिकालमें मारा मान पीग्या है इन्ही योनि-
 को भीष्टानेवाला श्री श्रीगणेशका ध्यान है इन्हीको सम्पद
 लक्ष्मी देनाधना करो ताको श्रीर दृग्गोदाय योनिमें उत्पन्न
 होनाका कर्मा न हो । मनु ।

॥ त्रैलोक्ये त्रैलोक्ये त्रैलोक्ये त्रैलोक्ये ॥

श्रीकृष्ण नं. ६

— श्रीकृष्ण —

(पद्मपुराणि हृत.)

स० अ० आहारीक

७

३

३

६

६

स० पर्याप्ता

७

१४

१४

१२

६

स० प० आहारीक

७

१४

१४

१२

६

स० प० अनाहारीक

१

२

१

२

१

पांचेन्द्रिय

४

१२

१५

१०

६

पा० अपर्याप्ता

२

३

५

८

६

पा० अ० अनाहारीक

२

३

१

८

६

पा० अ० आहारीक

२

३

४

८

६

पा० पर्याप्ता

२

१२

१४

१०

६

पा० प० आहारीक

२

१२

१४

१०

३

चौरिन्द्रिमे

२

२

४

६

३

चा० अपर्याप्ता

१

२

३

६

३

चा० अ० अनाहारीक

१

२

१

५

३

चा० अ० आहारीक

१

२

२

६

३

चा० पर्याप्तमे

०

०

२

४

३

चा० प० आहारीक

१

१

२

४

३

नेत्रेन्द्रिय

२

२

४

५

३

ने० अपर्याप्ता

१

२

३

५

३

ने० अ० अनाहारीक

१

२

१

५

३

ने० अ० आहारीक

१

२

२

५

३

ते० पर्याप्ता	१	२	२	३	३
ते० प० आहारीक	१	१	२	३	३
चेन्द्रिय	२	२	४	५	३
वे० अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
वे० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
वे० अ० आहारीक	१	२	२	५	३
वे० पर्याप्ता	१	१	२	३	३
वे० प० आहारीक	१	१	२	३	३
एकेन्द्रिय	४	१	५	३	४
ए० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
ए० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
ए० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
ए० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
ए० प० आहारीक	२	१	४	३	३
अनेन्द्रिय	१	२	५/७	२	१
अ० पर्याप्ता	१	२	५/७	२	१
अ० अनाहारीक	१	२	५	२	१
अ० आहारीक	१	१	५/७	२	१

॥ सेवंभते सेवंभते नमेव मञ्जम् ॥

थोकडा नं. ७

—*~*~*

(बहु श्रुतिकृत)

मार्गशा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
सकाय मे	१४	१४	१५	१२	६
स० अपर्याप्ता	७	३	५	६	६
स० अ० अनाहारीक	७	३	१	८	६
स० अ० आहारीक	७	३	४	६	६
स० पर्याप्ता	७	१४	१४	१२	६
स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
स० प० आहारीक	७	१३	१४	१२	६
पृथ्वीकायमे	४	१	३	३	४
पृ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
पृ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
पृ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
पृ० पर्याप्तमे	२	१	१	३	३
पृ० प० आहारीक	२	१	१	३	३

अपराधमे

६०) स्वपर्याया

अ० अ० दत्तात्रय

श० श० श्यामर्गक

अ० पर्याप्ता

अ० प० आचार्यद्व.

तेजकायमे

ने० श्यामा

३० अ० अनादारीक.

१० अ० आहारीक

१० पर्याप्ता

० ५० आहारिक

अष्टकायमे

पृथपयाम्।

४ अनायास

2 212 713

पञ्चास

५ अर्थः ॥

आस्पनिकाथम्

अपयामा

व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
व० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
व० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
व० प० आहारीक	२	१	१	३	३
तसकायमें	१०	१४	१५	१२	६
त० अपर्याप्ता	५	३	५	६	६
त० अ० अनाहारीक	५	३	१	८	६
त० अ० आहारीक	५	३	४	६	६
त० पर्याप्ता	५	१४	१४	१२	३
त० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
त० प० आहारीक	५	१३	१४	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव मद्यम् ॥

थोकडा नं. =

थोकडा नम्बर. ६

—*—
(बहुश्रुत कृत)

मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
द्रव्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
कषायात्मा	१४	१०	१५	१०	६
योगात्मा	१४	१३	१५	१२	६
उपयोगात्मा	१४	१४	१५	१२	६
ज्ञानात्मा	६	१२	१५	६	६
दर्शनात्मा	१४	१४	१५	१२	६
चारित्र्यात्मा	१	२	१५	६	६
वीर्यात्मा	१	१	१५	१२	६
गुणाक निग्रन्थ	१	२	२	३	६
वृक्ष	१	२	२	३	६
प्रातमेवना .	१	२	२	३	६
कषायकुशोन .	१	२	२	७	६
निग्रन्थ ..	१	२	२	७	१
स्नातक ..	१	२	२	७	१

थोकडा नं. १०



(घट्टश्रुति कृत.)

मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
मनुष्य जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
नारकीमे	३	४	११	६	३
ना० अर्थात्ता	२	३	३	६	३
ना० अ० अनाहारीक	२	३	१	६	३
ना० अ० आहारीक	२	३	२	६	३
ना० पर्यामा	१	४	१०	६	३
ना० प० आहारीक	१	४	१०	६	३
नीषचमे	१	४	१३	६	३
ना० अर्थात्ता	१	३	३	६	३
नी० अ० आहारीक	१	३	४	५	६
नी० अ० आहारीक	१	३	५	५	६
नी० पर्यामा	१	३	१२	६	६
नी० प० अर्थात्ता	१	३	१२	६	६
मनुष्यमे	१	३	१५	१२	६

मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
मतिज्ञानके अलक्षियामे	१४	४	१३	८	६
श्रुतिज्ञानके "	१४	४	१३	८	६
अवधिज्ञानके "	१४	१४	१५	११	६
मनःपर्यवज्ञानके "	१४	१८	१५	११	६
केवलज्ञानके "	१४	१२	१५	१०	६
मतिअज्ञानके "	६	१२	१५	९	६
श्रुतिअज्ञानके "	६	१२	१५	८	६
विभंगाज्ञान "	१४	१४	१५	११	६
चक्षुदर्शनके "	१२	५	७	१०	६
अचक्षु० "	१	२	५/७	२	१
अवधिज्ञानके "	१४	१४	१५	१०	६
केवलदर्शन० "	१४	१४	१५	१०	६
इन्द्रियका "	१	२	५/७	२	१
आनेन्द्रियका	११	४	६	८	५
चक्षुइन्द्रियका	१	५	६	७	५
घ्राणन्द्रियका	७	५	६	७	५
गन्धेन्द्रियका	१	३	६	५	५
स्पर्शेन्द्रियका	१	२	५/७	२	१
अनेन्द्रियका	१४	१८	१५	१०	६

कृष्णलेखा	"	१	८	१५	६	३
निललेखा	"	१	८	१५	६	३
काशिलेखा	"	१	८	१५	६	३
नैजलेखा	"	१	७	११	६	१
पद्मलेखा	"	१	७	११	६	१
शुक्ललेखा	"	१	१	०	२	०
अलेखा	"	१४	१३	१५	१२	६
संयोगिका	"	१	१	०	२	०
मनयोगिका	"	१	१	०	२	०
वचन०	"	१	१	०	२	०
काययोगि	"	१	१	०	२	०
अयोगि	"	१४	१३	१५	१२	६
मध्यमदृष्टी	"	१०	०	१३	६	६
मिथ्यादृष्टी	"	६	१०	१५	१०	६
मध्यमदृष्टी	"	१०	१	१५	१०	६
मध्यमदृष्टी	"	१३	६	१०	८	१
मध्यमदृष्टी	"	१०	१३	१५	१०	६
मध्यमदृष्टी	"	१०	१३	१५	१०	६

॥ मरभन मेवभने नमो मरभु ॥

समचारं संस्थान	२	१४	१५	१२	६
निग्रोधं संस्थान	२	१४	१५	१२	६
मादियं संस्थान	२	१४	१५	१२	६
वामन संस्थान	२	१४	१५	१२	६
कृञ्ज संस्थान	२	१४	१५	१२	६
हृन्डक संस्थान	१४	१४	१५	१२	६
सावचीया (सिद्ध)	०	०	०	२	०
सोवचीया (भव्य)	१४	१४	१५	१२	६
सा० सो (पदवाइ)	१४	१४	१५	१२	६
नि० नि० (अमव्य)	१४	१	१३	६	६
अश्वदमस्थ	१	२	५१७	२	१
अकेवली	१४	१२	१५	१०	६
असिद्ध	१४	१४	१५	१२	६
सचितयोनि	१२	२	६	६	४
अचितयोनि	१४	४	१३	६	६
मिश्रयोनि	१४	०	१३	६	६
शीतयोनिमे	१२	२	६	६	४
उष्णयोनिमे	२	१	३	३	३
मिश्रयोनिमे	२	४	१३	६	६
मंभृतयोनिमे	०	६	१३	६	६

थोकडा नम्बर. १३

—५५७३—

(बहुश्रुत कृत)

मार्गणा	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
पामुदेवकी आगति	१	४	१०	६	४
हारयादि सम्पद् द्रीष्टी	६	६	१५	७	६
अग्रती मनयोगमें	१	३	१२	६	६
एकान्तमंजी सम्प० अग्रती	२	२	१३	६	६
अग्रमत्त हारयादिमें	१	२	११	७	३
तेजोलेखी एकेन्द्रिमें	१	१	३	३	१
अमर गुणस्थानमें	१	३	१२	१२	६
अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
अमर गु० चमरान्त	१	२	१२	८	६
यथाज्ञात मयोंग	१	३	११	६	१
गुण० चमरान्त	१५	२	१३	८	६
मयोंग गु० चमरान्त	१४	२	१३	८	६
छद्मस्थ गु० च.	१०	१	१३	१०	६



थोकडा नं. १४

—१५०३—

(बहुश्रुत कृत)

(२८ लन्धि)		भव्य		अभव्य	
मार्गणा.		पुरुष	मि	पुरुष	मि
आमोमदि	लन्धि	हवे	हवे	हवे	हवे
विष्णोमदि	"	"	"	"	"
जलोमदि	"	"	"	"	"
मेलोमदि	"	"	"	"	"
मध्यामदि	"	"	"	"	"
मामश्वभाना	"	"	नही	नही	नही
अर्गविज्ञान			हवे	"	"
श्रुतायानि			"	"	"
विपुलमान			"	"	"
काननप्रान			"	"	"
वग्ग			नही	"	"
अग्निद			"	"	"

थोकडा नं. १५.

—००+६६१३+००—

(पुद्गलपरावर्तन)

अमंगल्याते वर्गका एक पन्योपम होता है दश कोडाकोड
 पन्योपमका एक मागरोपम होता है दश कोडाकोड मागरो-
 पमका एक उत्तमपिणी काल तथा दश कोडाकोड मागरोपमका
 एक अतमपिणी काल होता है इन्ही उत्तमपिणी अतमपिणीके
 मीताके बीस कोडाकोड मागरोपमको शास्त्रकारोंने एक कालपर
 कहा है एमे अनन्ते कालपरकका एक पुद्गलपरावर्तन
 होता है वह प्रत्येक जीवों भूतकालमें अनन्ते अनन्ते पुद्गलप-
 रावर्तन काये है विगेष बोधके लिये पुद्गलपरावर्तनको रथा
 प्रकाशमें बनलाने है यथा-द्रव्य, नेत्र, काल, मार । प्रत्येकके
 दो दो भेद है (१) पञ्च - १ सादा २ इय थोकडा
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०

८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२०

(५) कालापेक्षा चादर पुद्गलपरावर्तन—धीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्ममरण करे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीको कालापेक्षा चादर पुद्गलपरावर्तन केहते है । उन्हीमें भी काल अनन्त पुरण होते है ।

(६) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त कालचक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दूसरे कालचक्रके दूसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चौथा कालचक्रके चौथा समयमें एवं क्रमःपर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु बीचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब मा गीनताम नहीं इसी माफीक सम्पुरण कालचक्रका पुरण करते उन्हीको कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है । चादरमें मन्मका काल अनन्तगुणा लगता है ।

(७) नावापना चादर पुद्गलपरावर्तन — हवाके अनु-

अंगुल एक यव एक युक्त एक लिख छे चालाग्र पांच व्यव-
हारीया परमाणु इतनी पराद्धि है दश हजार जोजनका उंडा
उन्ही पात्ताके आठ जोजनकी जगती । जगतीके उपर आदा
जोजनकी वेदिका है गोल आकार अर्थात् धान्यवरणोके
पाइलीके आकार पाला होते हैं ।



अनवस्थित पालो कहनेका मतलब यह है कि जिन्होंकी
एक स्थित नहीं है वह आगे चलके बनलाया जावेगा ।

अनवस्थित पालों एक लक्ष योजनके विस्तारवालाको
मरम्बके दाखोंमें पुरण करें कि फीर जिम्के उपर एक दाखा
नहीं ठेर सकें । उन्ही भरे हवे पालेको कोट देवना हाथके
अन्दर लेके एक मरम्ब दाणा द्विपमें एक ममुटमें नाम्बतों
नाम्बतों चला जावे जहाँक यह पाला स्थानी न हो जावे,

पालाका चरमदाना जीस द्विपमें या समुद्रमें डाला है वहां अनवस्थित पाला जीस द्विप या समुद्रमें पीलकुल खाली हो गया है उन्ही द्विप या समुद्र जीतना लम्बा चोड़ा विस्तार-वाला और दश हजार जोजनका उंडा आठ जोजनकि जगती आदा जोजनकि वेदिकावाला पाला बनाके सरसवके दानोंसे भरे फीर वहांसे उठाके आगेके द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे जहांतककि वह पाला खाली न हो अर्थात् उन्ही पालामें शेष एक दाना रहे वहांपर उन्ही पालाको छोड़दे और जो एक दाना रहा था उन्हीको शीलाक नामका पालामें डालदे । कारणकि जो पहले लक्ष जोजन परिमाणवाला पाला था उन्हीका परिमाण हो जानेके कारण पहला दाना नहीं डाला था परंतु दुसरे दफे अनवस्थित होनेसे चरमदान डाला गया है ।

जिस द्विप या समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हुआ था उन्ही द्विप या समुद्र जीतने विस्तारवाला (उंडा आठ जोजन वेदिका पहलेवन) पाला बनावे वह सरसवसे भरके उन्ही द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चले चले चले पालामें यावत चरमका एक दाना रहे वह उन्ही पालामें डाल देवे जब शीलाक पालामें दो दाना रह जायें तब जीस द्विप या समुद्रमें वह अनवस्थित पाला खाली हो जाय उतना विस्तारवाला पाला बनाके भरके उन्ही द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चले चले चले

चरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे तब शीलाक पालामें तीन दाने जमा हवे । जिस द्विप वा समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हवा था उन्ही द्विप या समुद्र जीतना विस्तारवाला पाला बनाके सरसवके दानासे भरके आगेका द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे शेष चरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शीलाकपालामें चार दाने जमा हवे । इमीमाफीक अनवस्थित पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमे डालते डालते लक्ष जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी समपुरण भरा जावे तब अनवस्थित पालाको जहाँ खाली हवा है वहाही छोड़ दे और शीलाकपालको हाथमे ले के एकदाना द्विपमे एकदाना समुद्रमे डालते डालते शेष एकदाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाल देना अथवा शीलाक खाली पड़ा है पीछा अनवस्थितका पाला जो कि शीलाकका चरमदाना जिस द्विप या समुद्रमें पड़ाथा उन्ही द्विप या समुद्र जीतना अनवस्थित पाला बनाके सरसवके दानेसे भरके द्विप समुद्रमे डालता जावे शेष एक दाना रहे वह चरमका शीलाकपालामें डाले एकेक दाना डाल के पेटले कि माफीक शीलाकको भगटे कीर शीलाक का उठाके एकेक दाना द्विप वा समुद्रमें डालते डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाले तब प्रति-शीलाकमे दो दाना जमा हवे कीर अनवस्थित पालासे एकेक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे ओर शीलकके एकेक
 दाना प्रतिशीलाकमे डालते जावे इसीमाफीक करते करते
 प्रतिशीलक पाला लक्ष जोजनके परिमाण वाला भी सीखा
 सहित भरा जावे तब अनवस्थित ओर शीलाक दोनोको
 छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना
 समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे
 डलदेना जीत द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हुआ है इतना
 विस्तारवाला ओर भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवसे भरके
 आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जावे पूर्ववत् अनव-
 स्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे ओर शीलाक
 भरा जावे तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे और प्रति शीलाक
 पालासे पूर्ववत् एकेक दाना डालते डालते महाशीकको भरदे
 आगे पांचमो कोइ भी पाला नहीं है इसी वास्ते महाशीलाक
 पाला भरा हुआ है गेहेना देवे ओर पीछले जो अनवस्थित
 पालासे शीलाक भर देवे शीलाक पालामे प्रतिशीलाक भरदे
 प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महार्शीलाक पालामे
 दाना समावेश नहीं हो जाता है वास्ते पार्श्वशीलाक
 भी भरा हुआ रहे और अनवस्थित पालामे शीलाक
 पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमे दाना समावेश हो नहीं
 शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हुआ रहे और अन-
 वस्थित पाला भरा हुआ है वह शीलाक पालामे दाना समावेश

हो नहीं शके वास्ते अनवस्थित पाला भी भरा हुआ रहे इसी माफीक च्यारो पाला भरा हुआ है अब जो पीछे द्विप समुद्रमें सरसवके दाना डाला था उन्ही सर्व दोनोंको एकत्र कर एक रासी बनावे उन्ही रासीके अन्दर पूर्व भरे हुये च्यारों पालोंके सरसव दाने मीला देवे उन्ही रासीके अन्दरसे एक दाना निकलकर शेष रासी है वह उत्कृष्ट संख्याते है अर्थात् दोय दानोंको जघन्य संख्याते कहेंते है और पूर्व जो बतलाये हुये तीन पालोंसे द्विप समुद्रमें सरसवके दाने और च्यार पाले भरे हुये दानोंको मीलाके एक रासी करे तीन दानोंसे लगाके उन्ही रासीमें दो दाना कम हो बर्दातक मध्यम संख्याते होते है और गमीमें एक दाना कम होना उन्हीको उत्कृष्ट संख्याते कहे जाते है और वह रहा हुआ एक दाना रासीमें मीलादे अर्थात् ममपुग्ग गमीको जघन्य प्रत्येक असंख्याते कहेंते है अर्थात् पेहला डाले हुये द्विप समुद्रके सर्व ममव एकत्र करके भरे हुये च्यारों पालोंके ममव भी माथमें मीलाके मयकी एक गमी बनादे उन्ही गमीको जघन्य प्रत्येक असंख्याते कहेंते है और उन्ही गमीमें ममवका एक दाना निकाल लेवे तब शेष गमीको उत्कृष्ट संख्याते कहेंते है अगर दो दाना गमीमें निकाल लेवे तब शेष गमीको मध्यम संख्याते कहेंते है ।

प्रत्येक जपन्य असंख्यातोके जो रासी है उन्हीको रासी अभ्यास करे यथा-फोई आचार्योंका मत है कि जितना दाना रासीमें है उन्हीको उतना गुणा करना जैसे कल्पनाकि रासीमें १०० दाना हो तो सोको सोगुणा करनेसे १०००० होता है । दूसरा आचार्योंका मत है कि रासीमें जितने दाने हैं उन्हीको उतनीवार गुणा करना जैसे रासीमें १० दानोंकि कल्पना कि जाय ।

1-2-3-4-5-6-7-8-9-10
 11-12-13-14-15-16-17-18-19-20

- | | | | |
|--------|------------------|-------------------|--------|
| (१) | १०० | प्रथम दशको दशगुणा | करवों. |
| (२) | १००० | सोको दशगुणा. | |
| (३) | १०००० | हजारको दशगुणा. | |
| (४) | १००००० | दशहजारको दशगुणा | |
| (५) | १०००००० | लक्षको दशगुणा | |
| (६) | १००००००० | पूर्वको दशगुणा | |
| (७) | १००००००००० | .. | .. |
| (८) | १००००००००००० | .. | .. |
| (९) | १००००००००००००० | .. | .. |
| (१०) | १००००००००००००००० | .. | .. |

यह तौ कल्पनाकि र्मी हू परन्तु जो अवश्य प्रत्येका

संख्याते कि रासकों इसीमाफिक असंख्याते बार गुये करतों जो रासी आवे उन्हीकों जघन्य युक्ता असंख्याते केहेवे है अगर उन्ही रासीसे दो दाने निकाल के फीर रासीकी पृच्छा करे तो वह दो दाने कम कीये हूँ रासी मध्यम प्रत्येक असंख्याते है अगर उन्ही रासीमें एक दाना डालके पृच्छा करे तो उत्कृष्ट प्रत्येक असंख्याते है और दुसरा दाना डाल दे तो जघन्य युक्ता असंख्याते होते है । (एक आबिलका के समय परिमाण)

जघन्य युक्ता असंख्याते कि जो रासी है उन्हीकों पूर्ववत् रासी अभ्यासकर रासीमें दो दाने निकालके पृच्छा करतों वह रासी मध्यम युक्ता असंख्याते है अगर एक दाना डालके पृच्छा करने उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते है और रहा हुआ एक दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य असंख्याते असंख्याता होते है.

जघन्यासंख्याते असंख्यात कि रासकों रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीमें दो दाना निकालके पृच्छा करे तो शेष रासी मध्यमासंख्याते असंख्यात है एक दाना रासीमें मिला दे तो उत्कृष्ट असंख्याते असंख्यात होता है और दुसरा दाना जो मिला दे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ता होता है.

जघन्य प्रत्येक अनन्ता कि रासकों पूर्ववत् रासी अभ्यास करे उन्ही रासीमें दो दाना निकालके शेष रासी कि



पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह ६ चोत मीलाके ओर
तीनवार वर्ग करना ओर यह वर्ग रासी हो उन्हीके अन्त
केवलज्ञान केवलदर्शनके सर्व पर्याय मीलानेमे उत्कृष्ट अन्त
अनन्त होता है परन्तु लोकलोकमे एसा कोई भी पडा
नहीं है वास्ते शास्त्रकारोने यह सर्व को आठवा मध्यम अन्त
अनन्तमे ही गीना है तत्त्वकेवलीगम्य ।

२१ बोलोकी संख्या.

(३) संख्याते के तीन बाल जवन्य मध्यम उत्तुष्ट

(६) असंख्याते के नव बोल (१) जयन्त प्रत्ये

असंख्यानै, (२) मध्यम प्रे० अ. १० उ० प्र० अ

(४) जघन्ययुक्ता असंख्याने, ५ म० युक्ता असं०, (६

उ० यु० अमं०, (७) उचन्य प्रसंगान् अमंठयान्, (=

मन्त्रम अमर्यादने अमर = अमर्याद, ताने अमर्यादतर्ही

॥ अन्तर्गतं ह । ॥ नान्य प्रत्ये

अनन्ता । - 'म' गमय । ३ ५० अन

(१) जल पक्का अन्न न हो सके , जल्दा घनत्व (६

उत्कृष्ट युक्तः पतन्तः - यः यः पतन्तः पतन्तः । ८

मध्यमानन्वे यनन्वा । इत्युक्तानन्वे यनन्वा इति,

॥ सर्वं भूते सर्वं भूते सर्वं भूते ॥

